रविवार
23 जून 2024

पृष्ठ 4
गर्मियों में लीची का सेवन करने से...

पृष्ठ 5
थाई स्लिट स्कर्ट पहन हिना खान ने...

● देहरादून
● वर्ष 32
● अंक 140
● पृष्ठ 8
● मूल्य ₹ 1.00

आज का विचार

आपत्तियाँ मनुष्यता की कसौटी हैं। इन पर खरा उतरे बिना कोई भी व्यक्ति सफल नहीं हो सकता।
— पं. रामप्रताप त्रिपाठी

दून वैली मेल

सांध्य दैनिक
आर.एन.आई.- 59626/94
email: doonvalley_news@yahoo.com Website: dunvalleymail.com
डीएवीपी से मान्यता प्राप्त

सीएम धामी की बड़ी कार्यवाही: उत्तराखंड के चीफटाउन प्लानर को पद से हटाया

हमारे संवाददाता

देहरादून। लैंड यूज परिवर्तन मामले में गड़बड़ी के आरोपों से घिरे उत्तराखंड के मुख्य नगर एवं ग्राम नियोजक (चीफ टाउन एंड कंट्री प्लानर) एसएम श्रीवास्तव को अचानक आज यानि रविवार को पद से हटाते हुए उत्तराखंड शासन के आवास विभाग से अटैच कर दिया गया है। यह कार्रवाई मुख्यमंत्री पुष्कर सिंह धामी के निर्देश पर की गई है।

चीफ टाउन प्लानर को अटैच करने के साथ ही इस पद की जिम्मेदारी वरिष्ठ नगर एवं ग्राम नियोजक शालू थिंड (स्तर-2) को सौंपी गई है। बता दें कि मुख्य नगर एवं ग्राम नियोजक के पास किसी भी स्थल के मास्टर प्लान यानी भू-उपयोग तय करने को लेकर अहम जिम्मेदारी होती है। मास्टर प्लान से ही तय किया जाता है कि किस स्थल पर फैक्ट्री या उद्योग लगेंगे या वहां घर बनाए

जा सकेंगे। वर्तमान में देहरादून का जीआईएस आधारित मास्टर प्लान तैयार किया गया है और प्रदेश के तमाम शहरों का मास्टर प्लान भी केंद्र सरकार की योजना के तहत तैयार किया जा रहा है।

सूत्रों के अनुसार कुछ समय पूर्व मास्टर प्लान में भू-उपयोग तय करने को लेकर एसएम श्रीवास्तव पर गंभीर आरोप लगाए गए थे। अब इस कार्रवाई से आवास विभाग के तमाम अधिकारियों में हड़कंप मचा हुआ है। सूत्रों का यह भी कहना है कि कुछ शिकायत बदरीनाथ के मास्टर प्लान से संबंधित भी बताई जा रही हैं। यहां के प्लान को लेकर तमाम वर्ग लंबे समय से लामबंद भी है। इसको लेकर पूर्व राज्य सूचना आयुक्त राजेंद्र कोटियाल भी कई दफा खुलकर विरोध जाहिर कर चुके हैं। बताया जा रहा है कि सीएम धामी के सख्त रुख की चपेट में कई अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी आ सकते हैं। यदि ऐसा है तो लैंड यूज परिवर्तन को लेकर कहीं न कहीं बड़ी गड़बड़ी की आशंका जताना लाजमी है।

सीबीआई ने नीट-यूजी परीक्षा में अनियमितताओं की जांच अपने हाथ में ली

कार्यालय संवाददाता

नई दिल्ली। केंद्रीय जांच ब्यूरो ने रविवार को नीट-यूजी एग्जाम, 2024 में हुई कथित अनियमितताओं के संबंध में एफआईआर दर्ज की है। यह अहम कदम तब उठाया गया, जब एक दिन पहले केंद्र ने कैंडिडेट्स द्वारा की जा रही लगातार मांग को देखते हुए परीक्षा में हुई गड़बड़ी को लेकर इस मामले की जांच सीबीआई से कराने की घोषणा की गई थी।

गौरतलब है कि पिछले महीने इस परीक्षा में कुल 24 लाख छात्र शामिल हुए थे। केंद्रीय जांच एजेंसी ने केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय के संदर्भ पर अज्ञात व्यक्तियों के खिलाफ एक नया मामला दर्ज किया। अब शिक्षा मंत्रालय के एक वरिष्ठ अधिकारी ने भी स्वीकारते हुए कहा, 5 मई को आयोजित एनईईटी-यूजी में कथित अनियमितताओं, धोखाधड़ी और कदाचार के कुछ मामले सामने आए हैं।

आज उन सभी यूजी 1563 छात्रों की

परीक्षा थी, जिन्हें ग्रेस मार्क्स देकर एनटीए के द्वारा पास किया गया था। हालांकि, इस पर सवाल तब और गहरा गया था, जब 67 बच्चों को एक साथ 720 में से 720 अंक दे दिए गए थे। फिर कहीं न कहीं लगने लगा था कि गड़बड़ी हुई है, इस मामले पर केंद्र सरकार इस तरह की गड़बड़ी से इनकार करती आई है। लेकिन, जैसे-जैसे परतें खुलती जा रही है, वैसे इस मामले में पर्दाफाश होता जा रहा है। नीट-यूजी एग्जाम विवाद के बीच केंद्र सरकार ने शनिवार रात 9 बजे एनटीए (नेशनल टेस्टिंग एजेंसी) के डायरेक्टर जनरल सुबोध कुमार सिंह को हटाया गया। अब एनटीए के नए डीजी प्रदीप सिंह खरोला नियुक्त किए गए।

वही दूसरी ओर नीट-यूजी परीक्षा 2024 में हुई गड़बड़ी और प्रश्न पत्र लीक को लेकर मचे घमासान के बीच महाराष्ट्र एटीएस ने दो शिक्षकों को हिरासत में लिया।

गौरतलब है कि बिहार के बाद महाराष्ट्र दूसरा राज्य है, जहां नीट मेडिकल प्रवेश परीक्षा पेपर लीक मामले में लोगों को हिरासत में लिया गया है। नांदेड़ आतंकवाद निरोधी दस्ते (एटीएस) ने एनईईटी पेपर लीक मामले में शामिल होने के संदेह में संजय तुकाराम जाधव और जलील उमर खान पठान को हिरासत में लिया।

फैशन डिजाइनर ने गोल्डन टेंपल परिसर में योग करने पर मांगी माफी

अमृतसर। शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने स्वर्ण मंदिर में योगाभ्यास और इसकी तस्वीरें सोशल मीडिया पर पोस्ट कर "धार्मिक भावनाओं को आहत" करने का आरोप लगाते हुए फैशन डिजाइनर एवं 'लाइफस्टाइल इंफ्लुएंसर' अर्चना मकवाना के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई है। हालांकि, मकवाना ने इस मामले में माफी मांगते हुए कहा कि उनका

इरादा किसी की धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचाने का नहीं था। उसने माफी मांगते हुए कहा कि योग का प्रचार वो विश्वभर में करती है लेकिन उसे यह नही पता था कि योग करने से धार्मिक भावनाओं को ठेस पहुंचेगी। उसे नियम कानून पता नहीं था, उसे धमकियां मिल रही हैं जिसके बाद युवती ने वीडियो बनाकर माफ करने की अपील करते हुए कहा कि उसका कोई इरादा नहीं था कि सिख समुदाय की भावनाओं को ठेस पहुंचाए। गौर हो कि शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी ने 22 जून 2024 को श्री दरबार साहिब में योग करने के लिए अर्चना मकवाना के खिलाफ पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी, इस घटना से कुछ सिखों में नाराजगी है।

बिहार में एक हफ्ते गिरा तीसरा पुल

पटना। बिहार में पुलों के गिरने का सिलसिला रुकने का नाम नहीं ले रहा है। अररिया और सीवान के बाद अब मोतिहारी के घोड़ासहन ब्लॉक में पुल गिरने की घटना हुई है। निर्माणाधीन पुल ध्वस्त होने की यह हफ्ते भर के अंदर तीसरी घटना है। यहां घोड़ासहन प्रखंड के अमवा से चौनपुर स्टेशन जाने वाली सड़क में पुल बन रहा था। इस पुल की लंबाई लगभग 40 फिट थी और इसे लगभग 1.50 करोड़ की लागत से बनाया जा रहा था। पुल की ढलाई का काम शनिवार को ही हुआ था। इसके बाद रात में अचानक पुल भरभरा कर गिर गया। रविवार की सुबह जब गांव के लोगों की नजर इस पर पड़ी तो खबर आग की

तरह फैल गई। बता दें कि इस हफ्ते में यह तीसरा पुल है जो कि गिरा है। इसके पहले इसी सप्ताह अररिया और सीवान में दो अलग अलग पुल गिर चुके हैं। शनिवार को सीवान में एक पुल गिरने की घटना हुई थी। इस घटना पर जिलाधिकारी मुकुल कुमार गुप्ता ने कहा था कि यह पुल बहुत पुराना था। नहर से पानी छोड़े जाने पर खंभे ढह गए। वहीं लगातार टूटते पुलों पर उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने बड़ा अजीबो-गरीब बयान देते हुए कहा कि जो पुल टूटे हैं, वह पथ निर्माण विभाग के नहीं है और ना ही ग्रामीण कार्य विभाग के हैं। उन्होंने कहा कि जो पुल टूट कर पानी में बह गए हैं, वह 35-40 साल पुराने हैं। उनके बयान के मुताबिक, करोड़ों रुपये खर्च करके बने पुलों की मियाद सिर्फ 30-35 साल ही होती है। जबकि देश में अभी भी अंग्रेजों के बनाए कई ब्रिज पूरी मजबूती के साथ खड़े हैं।

जैव विविधता पर मंडराता संकट चिंताजनक

रोहित कौशिक, वरिष्ठ पत्रकार

'वर्ल्ड वाइड फंड फॉर नेचर'(डब्ल्यूडब्ल्यूएफ) की एक रिपोर्ट के अनुसार, बीते पांच दशकों में धरती की 68 प्रतिशत जैव विविधता नष्ट हो गयी है। इस दौरान हर दस में से सात जैव प्रजातियां खत्म हो चुकी हैं। सबसे ज्यादा हानि मीठे पानी के प्रजातियों को हुई है, जिनकी जनसंख्या में 84 प्रतिशत की भारी कमी आयी है। रिपोर्ट के अनुसार, यदि जैव विविधता के संरक्षण हेतु ईमानदारी से प्रयास किये गये, तो भी 2050 से पहले इसमें सुधार की कोई संभावना दिखाई नहीं देती।

डब्ल्यूडब्ल्यूएफ की भारत इकाई ने कहा है कि भारत में 12 प्रतिशत जंगली स्तनधारी जंतु और चिड़ियों की तीन प्रतिशत प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर हैं, जबकि 19 प्रतिशत उभयचर गंभीर खतरे में हैं।

अध्ययन में बताया गया है कि बीते चार दशकों में भारत की नम भूमि (वेटलैंड) का एक-तिहाई हिस्सा गायब हो चुका है। जैव विविधता पर मंडराता यह खतरा हमारे पर्यावरण के लिए नित नयी समस्या उत्पन्न कर रहा है। स्वार्थपूर्ति के चलते मनुष्य द्वारा किये गये प्राकृतिक दोहन के परिणामस्वरूप बीते चालीस वर्षों में पशु-पक्षियों की संख्या घटकर एक तिहाई रह गयी। इस दौरान पेड़-पौधों की विभिन्न प्रजातियां भी आश्चर्यजनक रूप से कम हुईं।

पेड़-पौधों की अनेक प्रजातियां तो विलुप्त होने के कगार पर हैं। वास्तव में समृद्ध जैव विविधता हमारे पर्यावरण को पोषकता तो प्रदान करती ही है, हमारे जीवन पर भी सकारात्मक प्रभाव डालती है। विडंबना यह है कि जैव विविधता के संकट को देखते हुए भी हम अपनी जीवनशैली को बदलने के लिए तैयार नहीं हैं। कुछ समय पहले संयुक्त राष्ट्र द्वारा जारी एक रिपार्ट में कहा गया था कि मानवता उसी प्राकृतिक दुनिया को तेजी से नष्ट कर रही है, जिस पर उसकी समृद्धि और अस्तित्व टिका है।

वनों, महासागरों, भूमि और वायु के दशकों से हो रहे दोहन और उन्हें जहरीला बनाये जाने के कारण हुए बदलावों ने दुनिया को खतरे में डाल दिया है। विशेषज्ञों के अनुसार, जानवरों और पौधों की 10 लाख प्रजातियां विलुप्त होने के कगार पर पहुंच गयी हैं। ये प्रजातियां बीते एक करोड़ वर्ष की तुलना में हजारों गुणा तेजी से विलुप्त हो रही हैं। जिस तेजी से ये प्रजातियां विलुप्त हो रही हैं, उसे देखते हुए डायनोसोर के विलुप्त होने के बाद से पृथ्वी पर पहली बार इतनी बड़ी संख्या में प्रजातियों के विलुप्त होने का खतरा है।

रिपोर्ट में इस मुद्दे पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा गया था कि हम अर्थव्यवस्था, आजीविका, खाद्य सुरक्षा, स्वास्थ्य व जीवन की गुणवत्ता के मूल को ही नष्ट कर रहे हैं। अध्ययन में इस पर भी विचार-विमर्श किया गया था कि किस प्रकार हमारी प्रजातियों की बढ़ती पहुंच और भूख ने सभ्यता को बनाये रखने वाले संसाधनों के प्राकृतिक नवीनीकरण को संकट में डाल दिया है।

संयुक्त राष्ट्र के जैव विविधता व पारिस्थितिकी तंत्र सेवाओं के विशेषज्ञ जोसेफ सेटल के अनुसार, लघुकाल में मनुष्यों पर खतरा नहीं है, परंतु दीर्घकाल में यह कहना मुश्किल है। यदि मनुष्य विलुप्त होते हैं तो प्रकृति अपना रास्ता खोज लेगी, क्योंकि वह हमेशा ऐसा कर लेती है। प्रकृति को बचाने के लिए बड़े बदलावों की जरूरत है।

हमें हर सामग्री के उत्पादन, पैदावार और उसके उपभोग के तरीके में आमूलचूल बदलाव करना होगा। दरअसल पशु-पक्षी अपने प्राकृतिक आवास में ही अपने आपको सुरक्षित महसूस करते हैं। प्राकृतिक आवास में ही इनकी जैविक क्रियाओं के बीच एक संतुलन बना रहता है। यह दुर्भाग्यपूर्ण है कि इस दौर में विभिन्न कारणों से पक्षियों का प्राकृतिक आवास उजड़ता जा रहा है। बढ़ते शहरीकरण और औद्योगीकरण के कारण वृक्ष लगातार कम होते जा रहे हैं। बाग-बगीचे उजाड़कर इन जगहों पर खेती-बाड़ी की जा रही है।

जलीय पक्षियों का प्राकृतिक आवास भी सुरक्षित नहीं बचा है। इन्हीं सब कारणों से किसी एक निश्चित जगह पर स्थापित होने के लिए पक्षियों के बीच प्रतिस्पर्धा बढ़ती जा रही है। एक ओर पक्षी मानवीय लोभ की भेंट चढ़ रहे हैं, तो दूसरी ओर जलवायु परिवर्तन के कारण इनकी संख्या लगातार घटती जा रही है। पक्षी विभिन्न रसायनों एवं जहरीले पदार्थों के प्रति अति संवेदनशील होते हैं। ऐसे पदार्थ भोजन या फिर पक्षियों की त्वचा के माध्यम से अंदर पहुंचकर उनकी मौत का कारण बनते हैं।

डीडीटी, विभिन्न कीटनाशक और खरपतवार खत्म करने वाले रसायन पक्षियों के लिए खतरनाक सिद्ध हो रहे हैं। मोर जैसे पक्षी कीटनाशकों के चलते काल के गाल में समा रहे हैं। पर्यावरण को स्वच्छ रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाला गिद्ध पशुओं को दी जाने वाली दर्द निवारक दवा की वजह से मौत का शिकार हो रहे हैं।

यह भी सच है कि जब भी जीवों के संरक्षण की योजनाएं बनती हैं तो बाघ, शेर तथा हाथी जैसे बड़े जीवों के संरक्षण पर तो ध्यान दिया जाता है, परंत पक्षियों के संरक्षण को अपेक्षित महत्व नहीं दिया जाता है। वृक्षों की संख्या में वृद्धि, जैविक खेती को प्रोत्साहित तथा माइक्रोवेव प्रदूषण को कम करके बहुत हद तक पक्षियों को विलुप्त होने से बचाया जा सकता है। समय आ गया है कि सरकार और हम सब मिलकर जैव विविधता को बचाने का सामूहिक प्रयास करें। (ये लेखक के निजी विचार हैं।)

आधीषमाणाया: पति: शुचायाश्च शुचस्य च।
वासोवायोऽवीनामा वासांसि मर्मृजत्।।

(ऋग्वेद १०-२६-६)

परमेश्वर प्रकृति के बनाने वाले और धारण करने वाले हैं। एक कुशल बुनकर के समान उन्होंने सुंदर प्रकृति की संरचना की है। परमेश्वर ने सभी जीवात्माओं के स्वरूपों की भी सुंदर संरचना की है।

रुक कर विजेता की मानसिकता से आगे बढ़ना

रेनू सैनी

रामधारी सिंह दिनकर द्वारा रचित प्रसिद्ध पंक्तियां हैंए श्यह प्रदीप जो दिख रहा हैए झिलमिल दूर नहीं है। थककर बैठ गए क्या भाई मंजिल दूर नहीं है।य इस कविता में कवि यात्री को प्रेरित करता है कि जब इतने लंबे सफर तक चले आए हो तो रुको नहींए आगे बढ़ो। लेकिन कई बार जीवन में रुकना भी जरूरी होता है। अगर थकान या दुर्घटना होने पर लगातार आगे बढ़ते रहें तो व्यक्ति शारीरिक एवं मानसिक रूप से बीमार हो जाता है। जीवन में सुख एवं आनंद की अनुभूति के लिए रुकना और ठहरना जरूरी है।

ऐसा सिर्फइनसानों के साथ ही नहींए बल्कि प्रकृति और जीव जंतुओं के साथ भी होता है। श्द वन स्ट्रॉ रिवॉल्यूशन्य में मसानोबू फुक्कुओका ने प्राकृतिक खेती संबंधी अपने प्रयोगों के बारे में लिखा है कि प्रकृति को अपना काम करने दिया जाए और उसमें कम से कम संभव हस्तक्षेप किया जाए। प्रकृति में कई चीजें प्राकृतिक रूप से बढ़ती हैं। यदि हम अधिक फसल एवं उत्पादन के लालच में लगातार नई खोजें करने लगते हैं तो कई बार विपरीत परिणाम सामने आते हैं। वहीं प्रकृति भी छेड़छाड़ से रुष्ट हो जाती है और प्राकृतिक आपदाएं व्यक्ति को लील जाती हैं।

जब कई लोग अपने खेतों में रसायनों और मशीनों का प्रयोग कर रहे थेए उस समय फुक्कुओका चेतन रूप से कुछ नहीं कर रहे थे। फिर भी ऊंची पैदावार तथा मिट्टी की बढ़ती समृद्धि के पुरस्कार उन्हें ही मिल रहे थे। आखिर ऐसा क्यों था कि अच्छे रसायन एवं मशीनें भी वे उत्पादन करने में असमर्थ सिद्ध हो रही थीं जो फुक्कुओका प्राकृतिक तरीके से करके पा रहे थे।

फुक्कुओका कहते हैं किए श्अपनी छेड़छाड़ से इनसान कुछ गलतियां कर देते हैंए फिर नुकसान को बिना सुधारे छोड़ देते हैं। विपरीत परिणाम मिलने पर वे पूरी ताकत से इन्हें सुधारने के लिए काम करते हैं। जब सुधारात्मक कार्य सफल नजर आते हैंए तो वे इन कदमों को शानदार उपलब्धियां मानने लगते हैं। यह तो ऐसा ही है कि कोई मूर्ख अपनी छत के खपरैलों पर कूदे और उन्हें तोड़ दे। जब बारिश होने पर छत टपकने लगे तो वह उसे ठीक करने के लिए खपरैल पर चढ़े और अत्यंत मेहनतए ऊर्जा एवं रुपयों की बर्बादी करने पर उसे ठीक करके नाचे कि उसने तो कमाल कर दिया।य

हम लोग भी अक्सर ऐसा ही करते हैं। दुर्घटना अथवा थकने पर भी कई बार बिना सोचे समझेए बिना रुके चलते जाते हैं। जब अर्थ का अनर्थ हो जाता है तो फिर उसके सुधार पर असीमित ऊर्जा एवं वित्त का व्यय करते हैं। दरअसल रुकना हमारे स्वभाव में नहीं है क्योंकि रुकने को हम नकारात्मक तरीके से लेते हैं। रुकने में हिम्मत की जरूरत होती है। ऐसा इसलिए होता है क्योंकि जब हम रुक जाते हैं तो अन्य लोग आगे बढ़ रहे होते हैं। हम लोगों को लगता है कि सबसे पीछे रहने वाले की न ही मिसालें दी जाती हैं और न ही वह प्रथम आता है लेकिन ऐसा नहीं है।

कैरॉली टेकास हंगरी की सेना में सार्जेंट थे। 1938 में 28 साल की आयु में वे देश के सर्वश्रेष्ठ पिस्टल शूटर थे। सभी का मानना था कि 1940 के टोक्यो ओलम्पिक गेम्स में वे स्वर्ण पदक जीतने के प्रबल दावेदार हैं। लेकिन दुर्घटनावश 1938 में एक सैन्य प्रशिक्षण सत्र में कैरॉली के हाथ में एक बम फट गया। उससे उनका दायां हाथ पूरा उड़ गया। इतनी बड़ी दुर्घटना होने पर उन्होंने आनन.फानन में आपा नहीं खोया। लगभग एक महीना वे अस्पताल में रहे। थोड़ा ठहरकरए विश्राम कर उन्होंने स्वयं से कहाए कि अभी मेरे पास बायां हाथ है। मैं अपने बाएं हाथ से अभ्यास करूंगा और एक दिन अपने देश के लिए पिस्टल शूटिंग में स्वर्ण पदक जीतूंगा।

इसके बाद वे दुनिया की नजरों से दूरए अपने बाएं हाथ से शूटिंग का अभ्यास करने लगे। उस दर्द के बावजूद अब उन्हें अपने वे सारे काम बाएं हाथ से करने पड़ रहे थे जो अभी तक दाएं हाथ से करते थे। लेकिन उनकी मानसिकता एक विजेता की बन चुकी थी। वर्ष 1939 में वे नेशनल चैम्पियनशिप में आए। वहां पर बहुत सारे बेस्ट पिस्टल शूटर थे। उन्हें लगा कि कैरॉली उनका हौसला बढ़ाने आए हैं। वे उनके पास जाकर बोलेए श्सरए आपकी हिम्मत की दाद देनी होगी जो इतनी बड़ी दुर्घटना होने पर भी आप यहां पर हमारा हौसला बढ़ाने आए हैं।य

यह सुनकर कैरॉली मुस्कराते हुए बोलेए श्मैं यहां तुम्हारे साथ अपना भी हौसला बढ़ाने आया हूं। मैं यहां तुम्हारे साथ मुकाबला करने आया हूंय इसके बाद उन्होंने ओलम्पिक के लिए तैयारी की लेकिन विश्व युद्ध के कारण दो बार के ओलम्पिक टल गए। आखिर 1948 मेंए लंदन में होने वाले ओलम्पिक में पिस्टल शूटिंग चैम्पियनशिप में हंगरी का प्रतिनिधित्व करने के लिए उन्हें चुना गया। हेल्सिंकी ओलम्पिक में पिस्टल शूटिंग मुकाबले में आखिर कैरॉली टेकास ने अपने सपने को पूरा कर लिया। वे स्वर्ण पदक जीत चुके थे। अगर दुर्घटना होने के बावजूद कैराली रुककर स्वयं को नहीं निखारते तो आज उनका नाम स्वर्णिम अक्षरों में दर्ज नहीं होता। इसलिए जीवन में प्राकृतिक आपदाएं आएं अथवा विपरीत परिस्थितियांए उनसे घबराकर आगे न भागें। कुछ समय के लिए थोड़ा रुक जाएं। आप पाएंगे कि कुछ समय बाद तूफान गुजर चुका होगा एवं मार्ग आपको मंजिल तक पहुंचाने के लिए साफहो गया होगा।

4 गलतियों की वजह से समय से पहले सफेद हो जाते हैं बाल !

खूबसूरत दिखाने में जितना बड़ा रोल मेकअप का होता है, उतना ही बालों का भी होता है. अगर बाल अच्छे हों और अच्छा हेयरस्टाइल बनाया गया हो, तो पूरा लुक बदल जाता है. लेकिन अक्सर हम बालों की देखभाल के मामले में लापरवाही बरतते हैं, जिसकी वजह से हमारे बाल रूखे और बेजान होने के साथ असमय सफेद होने लगते हैं.

एक बार सफेद बालों का सिलसिला अगर शुरू हो जाए, तो उसे कंट्रोल कर पाना इतना आसान नहीं होता. इसलिए यहां जानिए उन गलतियों के बारे में जो असमय सफेद बालों की वजह बनती हैं. इन गलतियों को सुधार कर आप अपने बालों का सफेद होना रोक सकते हैं और बालों को हेल्दी बना सकते हैं.

बचपन से ही हम सब अपनी मां से रोजाना बालों में तेल डालने की बात सुनते आ रहे हैं, लेकिन फिर भी इस मामले में लापरवाही बरतते हैं, क्योंकि हम इसकी अहमियत को नहीं समझते. दरअसल तेल डालने से बालों को पोषण मिलता है और सिर में रक्त संचार बेहतर होता है. इसके अलावा तेल मालिश सीबम प्रोडक्शन को नियंत्रित होता है, बालों को मॉइश्चर मिलता है. इससे बालों का असमय सफेद होना तो कम होता ही है, साथ ही बालों का रूखापन और खुजली जैसी समस्याएं भी दूर होती हैं.

बालों को सुंदर और स्टाइलिश दिखाने के लिए आजकल कई तरह के एक्सपेरिमेंट्स होने लगे हैं. लोग कर्ल बालों को केमिकल्स के जरिए स्ट्रेट कराते हैं और स्ट्रेट बालों को कर्ल कराते हैं. इसके अलावा बालों में कलर करने का फैशन है. ऐसे में बालों में कम उम्र में ही हैवी केमिकल्स का प्रयोग होने से बालों को जबरदस्त नुकसान पहुंचता है. इससे बाल झड़ने लगते हैं, बेजान हो जाते हैं और जल्दी सफेद होने लगते हैं. इसलिए जितना संभव हो बालों को नेचुरल रखें और हीटिंग टूल्स से से भी परहेज करें.

तनाव को भी असमय बाल सफेद होने की प्रमुख वजह माना जाता है. इसलिए ज्यादा तनाव लेने से बचना चाहिए. तनाव की वजह से हमें अन्य स्वास्थ्य संबन्धी समस्याएं भी झेलनी पड़ सकती हैं. तनाव से बचने के लिए मेडिटेशन का सहारा लें.

बाहर का जंकफूड और गरिष्ठ भोजन खाने की आदत सिर्फ तमाम बीमारियों का शिकार नहीं बनाती है, बल्कि बालों की सेहत को भी खराब करती है और बाल समय से पहले ही सफेद होने लगते हैं. वास्तव में हम जो भी खाते हैं, उससे हमारे शरीर और बालों को पोषण मिलता है. इसलिए अपनी डाइट में दालों, स्प्राउट्स, फल, हरी सब्जियों आदि को शामिल करें.

ईंधन दम घोंट रहा

पंकज चतुर्वेदी

राजधानी दिल्ली की हवा में इन दिनों अजब किस्म का जहर घुल रहा है। अजब इसलिए कि जिस ईंधन से वाहनों को चलाना सुरक्षित घोषित किया गया था, अब वही ईंधन दम घोंट रहा है। केंद्रीय प्रदूषण नियंतणबोर्ड(सीपीसीबी) के ताजे एयर बुलेटिन के अनुसार दिल्ली का एक्यूआई 224 है और इस बार हवा का मिजाज बिगड़ने का अकारण नाइट्रोजन डाई आक्साईड (एनओ 2) का आधिक्य है। एनओ-2 की हवा में मौजूदगी कार्बन डाईआक्साइड से भी अधिक घातक होती है। सीपीसीबी का आकलन है कि एनओ 2 की मात्रा बढ़ने का कारण सीएनजी वाहनों से निकलने वाली रासायनिक गैस हैं। दिल्ली में वायु प्रदूषण को नियंत्रित रखने के तंत्र ने महज पीएम 2.5 और 10 को नियंत्रित करने की कोशिशें की और इसके लिए सीएनजी वाहनों की संख्या इतनी हो गई कि अब काला धुएं की जगह अदृश्य धुआं इंसानों के जीवन का दुश्मन बना है। जुलाई-21 में जारी की गई रिपोर्ट 'बिहाइंड द स्मोक स्क्रीन : सैटेलाइट डाटा रिवील एयर पॉल्यूशन इन्क्रीज इन इंडियाज एट मोस्ट पॉपुलस स्टेट कैपिटल्स' में चेतावनी दे गई थी कि साल दर साल दिल्ली सहित देश के कई बड़े शहरों में नाइट्रोजन ऑक्साइड की मात्रा में इजाफा हो रहा है।

सेटेलाइट डाटा विश्लेषण के आधार पर ग्रीनपीस इंडिया की रिपोर्ट के मुताबिक अप्रैल 2020 की तुलना में अप्रैल 2021 में दिल्ली में नाइट्रोजन ऑक्साइड की मात्रा 125 फीसद तक ज्यादा रही। ग्रामीण क्षेत्रों में तो नाइट्रोजन ऑक्साइड के बढ़ने के कारण खेती में अंधाधुंध रासायनिक खाद का इस्तेमाल, मवेशी पालन आदि होता है, लेकिन बड़े शहरों में इसका मूल कारण निरापद या ग्रीन फ्यूल कहे जाने वाले सीएनजी वाहनों का उत्सर्जन है। जान लें नाइट्रोजन की ऑक्सीजन के साथ मिल कर बनीं गैसें-जिन्हें 'आक्साईड आफ नाइट्रोजन' कहते हैं, मानव जीवन और पर्यावरण के लिए उतनी ही नुकसानदेह हैं जितना कार्बन आक्साईड या मोनो आक्साइड।

यूरोप में हुए शोध बताते हैं कि सीएनजी वाहनों से निकलने वाले नेनो मीटर (एनएम) आकार के बेहद बारीक कण कैंसर, अल्जाइमर, फेफड़ों के रोग का खुला न्योता हैं। पूरे यूरोप में इस समय सुरक्षित ईंधन के रूप में वाहनों में सीएनजी के इस्तेमाल पर शोध चल रहे हैं। विदित हो यूरो-6 स्तर के सीएनजी वाहनों के लिए भी कण उत्सर्जन की कोई अधिकतम सीमा तय नहीं है और इसी लिए इससे उपज रहे वायु प्रदूषण और उसके इंसान के जीवन पर कुप्रभाव और वैश्विक पर्यावरण को हो रहे नुक्सान को नजरअंदाज किया जा रहा है। जान लें पर्यावरण मित्र कहे जाने वाले इस ईंधन से बेहद सूक्ष्म लेकिन घातक 2. 5 एनएम (नेनो मीटर) का उत्सर्जन पेट्रोल-डीजल वाहनों की तुलना में 100 से 500 गुना अधिक है।

खासकर शहरी यातायात में जहां वाहन बहुत धीरे चलते हैं, भारत जैसे चरम गर्मी वाले परिवेश में सीएनजी वाहन उतनी ही मौत बांट रहे हैं जितनी डीजल कार-बसें नुकसान कर रही थी बस कार्बन के बड़े पार्टकिल कम हो गए हैं। यह सच है कि सीएनजी वाहनों से अन्य ईंधन की तुलना में पार्टकुलेट मेटर 80 फीसद और हाइड्रो कार्बन 35 प्रतिशत कम उत्सर्जित होता है, लेकिन इससे कार्बन मोनो आक्साइड उत्सर्जन पांच गुना अधिक है। शहरों में स्मोग और वातावरण में ओजोन परत के लिए यह गैस अधिक घातक है।

परिवेश में 'आक्साईड आफ नाइट्रोजन' गैस अधिक होने का सीधा असर इंसान के स्वशन तंत्र पर पड़ता है। केंद्रीय प्रदूषण नियंतणबोर्ड के 2011 के एक अध्ययन में इस बात पर प्रकाश डाला गया है कि सीएनजी पर्यावरणीय कमियों के बिना नहीं है, यह कहते हुए कि सीएनजी जलाने से संभावित खतरनाक कार्बोनिल उत्सर्जन की उच्चतम दर पैदा होती है। अध्ययन से पता चला था कि रेट्रोफिटेड सीएनजी कार इंजन 30 प्रतिशत अधिक मीथेन उत्सर्जित करते हैं। ब्रिटिश कोलंबिया विविद्यालय के एक अध्ययन में कॉनर रेनॉल्ड्स और उनके सहयोगी मिलिंद कांडलीकर ने वाहनों में सीएनजी इस्तेमाल के कारण ग्रीनहाउस गैसों कार्बन डाईआक्साइड और मीथेन के प्रभावों पर शोध किया तो पाया कि इस तरह के उत्सर्जन में 30 प्रतिशत की वृद्धि है। यह जान लें कि सीएनजी भी पेट्रोल-डीजल की तरह जीवाश्म ईंधन ही है। यह भी स्वीकार करना होगा कि ग्रीनहाउस गैसों की तुलना में एरोसोल (पीएम) अल्पकालिक होते हैं, उनका प्रभाव अधिक क्षेत्रीय होता है और उनके शीतलन और ताप प्रभाव की सीमा अभी भी काफी अनिश्चित है। सीएनजी से निकली नाइट्रोजन आक्साईड अब मानव जीवन के लिए खतरा बन कर उभर रही है। दुर्भाग्य है कि हम आधुनिकता के जंजाल में उन खतरों को पहले नजरअंदाज करते हैं जो आगे चल कर भयानक हो जाते हैं। जान लें प्रकृति के विपरीत ऊर्जा, हवा, पानी किसी का भी कोई विकल्प नहीं हैं। नैसर्गिकता से अधिक पाने का कोई भी उपाय इंसान को दुख ही देगा।

सांस्कृतिक चेतना की अभिव्यक्ति

परिचय दास

विश्व का हर व्यक्ति होगा, जिसके पास ऐसी भाषा है जो या तो उसकी है या तो उसके माता-पिता की है या जिसे उसने जन्म से या जीवन में आगे चलकर अपना लिया है।

माता-पिता से मिली हुई भाषा यानी मातृभाषा की स्मृतियां और बिंब गहरे होते हैं और प्रभाव बहुत व्यापक। उसमें स्मृति की समूह परकता होती है। किसी जातीय भाषा के बनने की प्रक्रिया के लिए यह समझना जरूरी है कि भाषा और समाज के बीच तीन तत्व विद्यमान होते है : भाषा, समाज और संसर्ग। कोई भी भाषा जैसे ही संसर्ग के साधन का काम करना बंद कर देती है कि वह विकसित होना बंद कर देती है। वह सिर्फ साहित्य में संरक्षित मृत भाषा बन जाती है। भाषा का सजातीय कृत्य उसकी जातीय विशिष्टता में प्रत्येक व्यक्ति के कल्पनापरक चिंतन के अनुकरणीय साहचर्यों में निहित है। जातीय भावना, सजातीय चेतना कई बातों में पैदायशी ज़ुबान पर आधारित होती है। यह बिल्कुल स्वाभाविक है क्योंकि मनुष्य इसी भाषा में अपनी मां के सबसे पहले शब्दों को सुनता है।

यह अकारण नहीं कि विभिन्न जनगण अपनी पैदायशी जबान को अपनी मातृभाषा कहते हैं। मातृभाषा से भावात्मक लगाव किसी भाषा के अधिकारों का उल्लंघन होने की स्थिति में जनव्यापी विरोध-प्रदर्शन का स्रोत होता है। पैदायशी जबान गैर जातीय संस्कृति के संरक्षण और विकास के नारों की जातीय समुदाय में द्रुत अनुक्रिया होती है और वे वर्गीय तथा सामाजिक विरोधों के अस्थाई तौर पर पृष्ठभूमि में धकेल देते हैं। 1961 के भारतीय जनगणना के मुताबिक मातृभाषा के नाम से 1652 भाषाओं को दर्ज किया गया था। इसमें 17 ऐसी भाषाएं थी, जो केवल एक व्यक्ति द्वारा इस्तेमाल होती थी, ऐसा उसमें उल्लिखित था। जिनको पहले बोलियां कहते रहे हैं, भाषा विज्ञान की दृष्टि से देखें तो उनमें साहित्यिक रचना होने के कारण, उनका व्यवहार बढ़ने के कारण, फिल्मों में गतिशिलता तथा वैश्विक स्वरूप बनने के कारण कई भाषा कहीं जा सकती हैं।

भारत में भाषा के समाज शास्त्रीय पहलू पर यह कह सकते है कि शिक्षा प्राप्त करने के बाद खड़ी भाषा बालने वाले साहित्यिक भाषा को अपना लेते है और पूरी तरह आत्मसात कर लेते हैं, यद्यपि वे अपनी भाषा की बोलीगत रंगत को बनाए रखते हैं। दूसरी ओर दैनंदिन बोली जाने वाली खड़ी बोली की परिधि भी बढ़ रही है, क्योंकि समाज के बहुत से अशंकों के सदस्य शहरों में आ जाने पर अथवा गांव में संसर्ग का परिभाग बढ़ जाने पर अपनी ग्रामीण बोली की जगह अंतःक्षेत्रीय बोलचाल की भाषा को अपना लेते हैं। इस तरह के संक्रमण में कई क्रमिक मंजिलें होती हैं-ग्रामीण स्थानिक भाषा से शहरी अंतर्भाविक किस्म और फिर मानक भाषा में संक्रमण आता है।

बोली और साहित्यिक भाषा की अपनी नियम प्रणाली है तो दैनंदिन बोलचाल की जबानों की विशेषता विभिन्नता का ऐसा पैमाना है कि किसी भी नियम अथवा मानदण्ड प्रणाली का अस्तित्व ही संदेहास्पद हो जाता है। कार्यात्मक दृष्टि से खड़ी बोली के निचले रूप एक ही कार्य करते हैं। वे बोलीगत नियम प्रणाली को नष्ट करते और इस तरह से इसकी जमीन तैयार करते हैं कि उनके बोलने वाले दैनंदिन अंतः आंचलिक भाषा के मानदण्डों को आत्मसात करे और साहित्यिक मानक को अंगीकार करें।

अमेरिकी समाजशास्त्रियों ने आधुनिक कृषि प्रविधियों का संबंधित करने में रेडियों और प्रेस की कारगरता का आकलन करने के लिए कर्नाटक में कई गांवों का सर्वेक्षण किया और तीन सौ कृषक परिवारों से पूछताछ की। उनकी पूछताछ से साथ ही यह बात भी सामने आई है कि राष्ट्रीय एकीकरण की अपीलें उत्तरदाताओं में अपेक्षाकृत अनुक्रिया नहीं पैदा करती थी। जबकि स्थानीय समस्याओं में वे अत्यंत सजीव दिलचस्पी जताते थे। इसके अलावा अधिकांश उत्तरदाताओं ने प्रश्नावली में उल्लेखित आत्मिक मूल्यों में सबसे महत्वपूर्ण अपनी मातृभाषा को बतलाया है। इसी तरह जहां तक भोजपुरियों की बात है तो न सिर्फ यहां कि उनके यहां कोई इतिहास निर्मित केन्द्र नहीं है (प्रमुखतः बनारस या गोरखपुर मान सकते हैं) बल्कि वे प्रशासनिक सीमाओं द्वारा बिहार, उत्तर प्रदेश, झारखण्ड, छत्तीसगढ़ मध्यप्रदेश आदि राज्यों के बीच विभाजित भी है। भोजपुरी ने अमूमन हिन्दी, खड़ी बोली के अहित में अब तक कोई कदम नहीं उठाया है। यह उसकी समंजन दृष्टि का परिचायक है। एनवी वैद्य कहते है कि हिन्दी एक ऐसी भाषा व्यवस्था (संरचना) के रूप में सामने आती है, जिसके विभिन्न तथ्य घनिष्ठतः जुड़े हुए हैं और अपने बीच अन्यान्य क्रिया करते हैं। मातृभाषा का सवाल अपनी सांस्कृतिक चेतना को गति देने उसे प्रकट करने अपनी रचनात्मकता को सही रूप सम्मानित होने, अन्य विभिन्न भाषा-भाषियों द्वारा उसके लिए उचित सामाजिक राजनैतिक प्रशासनिक स्पेस बनाने से गहरा जुड़ा है।

घातक प्रभावों से सुरक्षा मानवीय अधिकार

सुभाष कुमार

यह जानते हुए भी कि प्रकृति के साथ इंसानी क्रूरता से उपजे ग्लोबल वार्मिंग संकट ने हमारे दरवाजे पर दस्तक दे दी है, हमारी सरकारें इस गंभीर चुनौती के मुकाबले को लेकर उदासीन नजर आती हैं। आज दुनिया में हर साल करोड़ों लोगों को अतिवृष्टि, अनावृष्टि, सूखे, बाढ़ व चक्रवातों की वजह से विस्थापन का दंश झेलना पड़ रहा है। वैश्विक स्तर पर खेतों में खाद्यान्न उत्पादकता में कमी आई है। साथ ही लाखों लोगों को अपने जीवन से हर साल हाथ धोना पड़ता है। लेकिन विकसित देशों द्वारा जलवायु परिवर्तन पर बड़े सम्मेलनों के आयोजन के अलावा इस संकट से निपटने के लिये युद्धस्तर पर कोई कोशिश होती नजर नहीं आती। सिर्फ जुबानी जमाखर्च के अलावा कोई ठोस पहल विकसित व विकासशील देशों के स्तर पर अब तक नहीं हुई है। यही वजह है कि जलवायु परिवर्तन के घातक प्रभाव के प्रति सरकारी निष्क्रियता को चुनौती देने वाली स्विस वृद्ध महिलाओं द्वारा दायर याचिका पर यूरोपीय मानवाधिकार न्यायालय का फैसला सरकारों की जवाबदेही तय करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। यह ऐतिहासिक आदेश इस बात पर बल देता है कि जलवायु परिवर्तन प्रभावों से सुरक्षा मांगना एक मौलिक मानव अधिकार है। निस्संदेह फैसला पूरे यूरोप के लिये एक नजीर होनी चाहिए। यह फैसला बताता है कि जलवायु संकट से निपटने की तत्काल जरूरत है। सरकारों को जलवायु अनुकूल नीतियों को लागू करने में दृढ़ इच्छाशक्ति दिखानी होगी। साथ ही सरकारों को जवाबदेह बनाने वाले सार्वजनिक दबाव व नागरिक सक्रियता को गंभीरता से लेने की जरूरत है। निस्संदेह नागरिकों की जागरूकता को कमतर नहीं आंका जा सकता। जाहिर बात है कि यदि लाखों लोगों के जीवन की गुणवत्ता व प्रत्याशा को जलवायु संकट बुरी तरह प्रभावित कर रहा हो तो सरकारें कैसे उदासीन बनी रह सकती हैं। निश्चित रूप से यूरोपीय मानवाधिकार न्यायालय का फैसला पूरे विश्व के लिये मार्गदर्शक साबित हो सकता है। हाल ही में भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने एक फैसले में जलवायु परिवर्तन के प्रभाव से जीवन रक्षा को हमारे संविधान प्रदत्त मौलिक अधिकारों की श्रेणी में रखा था। कोर्ट ने माना था कि जलवायु परिवर्तन का असर सीधा जीवन के अधिकार पर पड़ता है। अदालत ने एक फैसले में कहा था कि जलवायु परिवर्तन के हानिकारक प्रभावों से बचने के लिये नागरिकों के अधिकारों की दृष्टि से स्वच्छ ऊर्जा के उपयोग को प्राथमिकता देने पर बल दिया जाना चाहिए। निश्चित रूप से यूरोपीय मानवाधिकार न्यायालय का फैसला यूरोपीय व अमेरिकी देशों की जलवायु नीतियों को भी नया आकार प्रदान करने में सहायक होगा। यह फैसला जलवायु परिवर्तन और मानवाधिकारों के अंतर्संबंध को प्रदर्शित करते हुए बताता है कि पर्यावरणीय संकट के कारण हाशिये पर आने वाले समुदायों को तत्काल संरक्षण प्रदान करने की जरूरत है। पर्यावरण के स्तर पर उत्पन्न प्रतिकूल परिस्थितियां समाज में हाशिये पर रहने वाले समाजों को असंगत रूप से प्रभावित करती हैं। साथ ही सामाजिक असमानता को बढ़ाती हैं। भारत के अंडमान और निकोबार द्वीप समूह में जनजातियों के सामने भोजन व पानी का संकट पैदा हो रहा है। इन उपेक्षित समुदायों पर जलवायु परिवर्तन के प्रभाव दूरगामी हो सकते हैं। निश्चित रूप से नवीकरणीय ऊर्जा को प्रोत्साहन से जलवायु परिवर्तन के दुष्प्रभावों को कम करने में खासी मदद मिल सकती है। वैकल्पिक ऊर्जा का प्रयोग न केवल जीवाश्म ईंधन पर निर्भरता को कम करता है बल्कि समाज के सभी वर्गों के लिये स्वच्छ और सस्ती ऊर्जा की पहुंच सुनिश्चित करके सामाजिक समानता को भी बढ़ावा देता है। निश्चित रूप जलवायु परिवर्तन प्रभावों पर अदालत का फैसला एक आदर्श बदलाव का संकेत भी है। जो जलवायु बदलावों के प्रभावों से निपटने तथा भविष्य की पीढ़ियों के अधिकारों की रक्षा के लिये सरकारों को जवाबदेह बनाता है।

अर्थव्यवस्था मजबूत करते सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम

सतीश सिंह

कुछ क्षेत्र अत्यंत पिछड़े थे, जैसे- आधारभूत संरचना व शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली, पानी, आवास जैसी बुनियादी सुविधाएं। चूंकि निजी क्षेत्र सुधारात्मक पहल नहीं कर रहे थे, इसलिए सरकार ने पंचवर्षीय योजनाओं को मूर्त रूप दिया और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों की स्थापना की, ताकि एक निश्चित समय में समावेशी विकास की संकल्पना को साकार किया जा सके। देश में मिनी रत्न, नवरत्न और महारत्न कंपनियों की स्थापना की गयी और इनकी वित्तीय जरूरतों को पोषित करने, आर्थिक गतिविधियों में तेजी लाने, वित्तीय समावेशन की संकल्पना को साकार करने, लोगों को आत्मनिर्भर बनाने और अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए निजी बैंकों का राष्ट्रीयकरण किया गया।

आजादी के समय देश में लगभग 11 सौ छोटे-बड़े निजी बैंक थे, जिनका मुख्य मकसद मुनाफा कमाना था। सामाजिक सरोकारों को पूरा करते हुए मुनाफा कमाने और अर्थव्यवस्था को सशक्त बनाने के लिए भारतीय स्टेट बैंक का राष्ट्रीयकरण एक जुलाई 1955 को किया गया, जबकि अन्य बैंकों का 1969 और 198० में।

साल 2०17 में देश में 27 सरकारी बैंक थे, जिनकी संख्या समेकन के बाद अप्रैल 2०2० में घटकर 12 हो गयी। बैंक कॉरपोरेट, आधारभूत संरचना, जैसे- सोलर एनर्जी, विंड एनर्जी, कृषि प्रसंस्करण, रेल कारखाना, रेलवे लाइन, एयरपोर्ट, बंदरगाह आदि, सूक्ष्म, लघु और मझौले उद्योगों, कृषि व संबद्ध क्षेत्र, जैसे- पशुपालन, डेयरी, हस्तशिल्प, कृषि आधारित उद्योग, ग्रामीण क्षेत्र में बुनियादी सुविधाएं उपलब्ध कराने के लिए वित्त पोषण का काम कर रहे हैं। बैंक ग्रामीणों को बैंक से जोड़ने, महिलाओं का सशक्तीकरण करने, प्रत्यक्ष लाभ हस्तांतरण, डिजिटल लेन-देन को बढ़ावा देने जैसे काम भी कर रहे हैं।

जनवरी 2०23 तक भारत में 12 महारत्न, 13 नवरत्न कंपनियां और 62 मिनीरत्न कंपनियां थीं। आर्थिक रूप से मजबूत और मुनाफे वाली कंपनियां होने के कारण ये कंपनियां शेयर बाजार में सूचीबद्ध होती हैं। सार्वजनिक क्षेत्र की इकाइयों को केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र उपक्रम (सीपीएसई), सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक (पीएसबी) और राज्य स्तरीय सार्वजनिक उद्यम के रूप में वर्गीकृत किया गया है।

सीपीएसई को भारी उद्योग और सार्वजनिक उद्यम मंत्रालय नियंत्रित करता है तथा सार्वजनिक उद्यम विभाग (डीपीई) सभी केंद्रीय सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यमों के लिए नोडल विभाग के रूप में काम करता है। वित्त वर्ष 1996-97 में सार्वजनिक क्षेत्र की वैसी कंपनियों को नवरत्न का दर्जा दिया गया, जो पहले से मिनी रत्न कंपनियों में वर्गीकृत थीं और उनके प्रदर्शन में निरंतर सुधार हो रहा था। सरकार को लग रहा था कि अगर इन्हें नवरत्न का दर्जा देकर कुछ और विशेष अधिकार एवं वित्तीय स्वायत्तता दी जाए, तो इनका प्रदर्शन और बेहतर हो सकता है।

भारत इलेक्ट्रॉनिक्स लिमिटेड, कंटेनर कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड, इंजीनियर्स इंडिया लिमिटेड, हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड, महानगर टेलीफोन निगम लिमिटेड, नेशनल एल्युमिनियम कंपनी लिमिटेड, एनबीसीसी लिमिटेड, एनएमडीसी लिमिटेड, एनएलसी इंडिया लिमिटेड, ऑयल इंडिया लिमिटेड, राष्ट्रीय इस्पात निगम लिमिटेड, रेल विकास निगम लिमिटेड, शिपिंग कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया लिमिटेड आदि नवरत्न कंपनियां हैं।

सरकार ने फरवरी 2०1० में महारत्न योजना लेकर आयी और मुनाफा, पर्याप्त पूंजी उपलब्धता, कम उधारी, तरलता, वित्तीय स्वायत्तता आदि मानकों पर खरा उतरने वाली नवरत्न कंपनियों को महारत्न कंपनी का दर्जा दिया गया। भारत हेवी इलेक्ट्रिकल्स लिमिटेड, भारत पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड, कोल इंडिया लिमिटेड, भारतीय गैस प्राधिकरण लिमिटेड, हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लिमिटेड, इंडियन ऑयल कॉर्पोरेशन लिमिटेड, राष्ट्रीय ताप विद्युत निगम, तेल एवं प्राकृतिक गैस निगम, पावर ग्रिड कॉर्पोरेशन, स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड, पावर फाइनेंस कॉर्पोरेशन और रुरल इलेक्ट्रिफिकेशन कॉर्पोरेशन लिमिटेड 12 महारत्न कंपनियां हैं।

अमूमन निजी क्षेत्र आधारभूत संरचना को मजबूत करने के लिए आगे नहीं आते हैं। इसलिए सरकार ने सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रमों का गठन किया। आज मिनीरत्न, नवरत्न, महारत्न कंपनियां और सार्वजनिक क्षेत्र के बैंक प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध कराने का काम कर रहे हैं। इनकी वजह से विकास को गति मिल रही है। *(ये लेखक के निजी विचार हैं)*

वैधानिक सूचना

सुविज्ञ पाठकों से आग्रह है कि इस समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन में दिए गए तथ्यों, शर्तों और दावों के प्रति वह खुद भी आश्वस्त हो लें। पाठकों से आग्रह है कि वह प्रकाशित विज्ञापन से प्रभावित होकर कोई कदम उठाने से पहले अपने स्तर पर भी स्वयं के संतुष्ट होने तक संपूर्ण व्यावहारिक जानकारी कर लें। भविष्य में किसी भी प्रकाशित विज्ञापन व लेख में निहित दावों या शर्तों को लेकर पाठकगण को कोई असुविधा या परेशानी होती है तो *सांध्य दैनिक दून वैली मेल* के मुद्रक, प्रकाशक या सम्पादक की कोई जवाबदेही नहीं होगी।

–प्रबंधक विज्ञापन

गर्मियों में लीची का सेवन करने से होंगे कई स्वास्थ्य लाभ

लीची एक फल है। इसका स्वाद मीठा होता है। इसका रंग लाल और सफेद होता है। इसकी महक और स्वाद के कारण इसे कई व्यंजनों और कॉकटेल में इस्तेमाल किया जाता है। ये स्वास्थ्य के लिए कैसे लाभदायक है आइए जानें।

लीची के फायदे

वजन कम करने के लिए-लीची में कैलोरी अधिक मात्रा में नहीं होती है। इसमें अधिक मात्रा में पानी और फाइबर होता है। ये वजन घटाने में मदद करता है। इसलिए आप वजन घटाने के लिए लीची को अपनी डाइट में शामिल कर सकते हैं।

आंखों को स्वस्थ रखने के लिए-लीची में फाइटोकेमिकल्स होते हैं। ये एंटीऑक्सीडेंट और एंटीनाइपलास्टिक जैसे गुणों से भरपूर होती है। ये आंखों से संबंधित समस्या के लिए लाभकारी है। ये आंखों का धुंधलापन और मोतियाबिंद को रोकने में मदद करता है।

हृदय को स्वस्थ रखने के लिए-लीची में एंटीऑक्सीडेंट होते हैं। ये हृदय को स्वस्थ रखने में मदद करते हैं।

बालों की चमक के लिए-बालों को चमकदार बनाने के लिए आप लीची का इस्तेमाल कर सकते हैं। इसके लिए आप लीची की लुगदी निकालकर मैश करें। इसे 15 मिनट के लिए बालों पर लगाएं। ये बालों को चमकदार बनाने में मदद करेगा।

त्वचा के लिए-लीची में विटामिन ई होता है। इसमें विटामिन सी, बीटा-कैरोटीन, पॉलीफेनोल, ऑलिगोनोल्स और अन्य एंटीऑक्सिडेंट होते हैं। ये त्वचा के दाग धब्बे दूर करने में मदद करते हैं साथ ही त्वचा पर निखार लाने का काम करते हैं।

हाइड्रेटेड रहने के लिए-लीची में पानी की मात्रा अधिक होती है। ये शरीर में पानी की कमी को दूर करने में मदद करता है। गर्मियों में आप इसका सेवन करने से खुद को डिहाइड्रेशन से बचा सकते हैं।

पाचन तंत्र स्वस्थ-लीची में फाइबर की मात्रा अधिक होती है। इसका सेवन करने से आपका पाचन तंत्र स्वस्थ रहता है। गर्मियों में ये उल्टी और दस्त जैसी समस्याओं से बचाने में मदद करता है।

इम्यूनिटी बढ़ाने के लिए-लीची में विटामिन सी, राइबोफ्लेविन, फोलेट,नियासिन और बीटा कैरोटीन होता है। लीची का सेवन करने से इम्यूनिटी मजबूत होती है।

ब्लड प्रेशर कंट्रोल-लीची में पोटैशियम और सोडियम अधिक मात्रा में होता है। ये ब्लड प्रेशर को कंट्रोल करने में मदद करते हैं। इसलिए ब्लड प्रेशर के मरीजों के लिए लीची का सेवन करना फायदेमंद माना जाता है।

रूखे और फटे गालों की समस्या है तो अपनाएं ये घरेलू नुस्खे

रूखे और फटे गालों की समस्या न सिर्फ कष्टदायक होती है, बल्कि इससे चेहरे की खूबसूरती भी प्रभावित होती है। यह समस्या चेहरे को ठीक से मॉइश्चराइज न करने, सूरज की किरणों के सीधे प्रभाव में आने, पानी के कम सेवन और मौसम में बदलाव आदि कई कारणों से हो सकती है। आइए आज आपको कुछ ऐसे घरेलू नुस्खे बताते हैं जिन्हें अपनाकर आप अपने रूखे और फटे गालों को जल्द ठीक करके इन्हें खूबसूरत बना सकते हैं।

शहद कई ऐसे औषधीय गुणों से समृद्ध होता है जो त्वचा को प्राकृतिक रूप से मॉइश्चराइज करने और इसके घावों को जल्द भरने में सहायक साबित हो सकते हैं। फटे और रूखे गालों को ठीक करने के लिए पहले चेहरे को धोएं और फिर इसे तौलिये से पोंछकर गालों पर शहद लगाएं। अब आधे घंटे बाद चेहरे को साफ पानी से धो लें। अच्छे परिणाम के लिए रोजाना इस उपाय को दोहराएं।

दूध लैक्टिक एसिड और अल्फा-हाइड्रोक्सी एसिड जैसे गुणों से भरपूर होता है। ये गुण फटे और रूखे गालों को धीरे-धीरे ठीक करने में मदद कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त ये गालों पर चमक लाने में भी सहायक हो सकते हैं। फटे और रूखे गालों से राहत पाने के लिए गालों पर रूई से दूध लगाएं और फिर जब यह सूख जाए तो गालों को साफ पानी से धोकर तौलिये से पोंछे। इसके बाद गालों पर मॉइश्चराइजर लगाएं।

नारियल के तेल में फैटी एसिड और विटामिन-ई मौजूद होते हैं जो गालों को हाइड्रेट रखने के साथ-साथ इन्हें मॉइश्चराइज भी रखते हैं। फटे और रूखे गालों को ठीक करने के लिए नारियल के तेल की कुछ बूंदें लें और इन्हें अपने गालों पर तब तक रगड़ते रहें जब तक कि ये गालों में पूरी तरह से समा न जाए।

रोजाना पर्याप्त मात्रा में पानी का सेवन कई समस्याओं से राहत दिला सकता है। फटे और रूखे गालों से राहत दिलाने में भी पानी का सेवन लाभदायक साबित हो सकता है।

शब्द सामर्थ्य -119

(भागवत साहू)

बाएं से दाएं

1. तकलीफ, कष्ट, कठिनाई, परेशानी 3. सरल, सहज 6. ज्ञान प्राप्त करना, शिक्षा लेना 7. विवश, लाचार 8. अत्यधिक ठंडा, सुस्त 9. अच्छे ढंग में गाया जाने वाला सुंदर गीत 11. सूर्य, सूरज 13. वस्त्र आदि धारण कराना 15. अप्रसन्न, नाखुश 16. खिंचाव, आकर्षण शक्ति (उ.) 18. एक रंग, आसमानी रंग 22. सेवा-सत्कार, आवभगत 23. सर्प, सांप, लकड़ी आदि की मूर्ति बनाना।

ऊपर से नीचे

1. हृदर, उर 2. शिष्टता, भद्रता, विवेक (उ.) 3. अंततः, अंततोगत्वा 4. अच्छी शिक्षा, नेक सलाह 5. आवागमन, गमनागमन 7. पुरुष 8. घोड़े की तेज चाल, तेज गति की दौड़ 10. लूटपाट, डकैती 12. बबार्दी, तबाही 14. नासिका, श्वसनइंद्रीय 17. आखेटक, अरेही 19. योग्य, काबिल 20. कामदेव की पत्नी, प्रेम, आनंद 21. रात्रि, निशा।

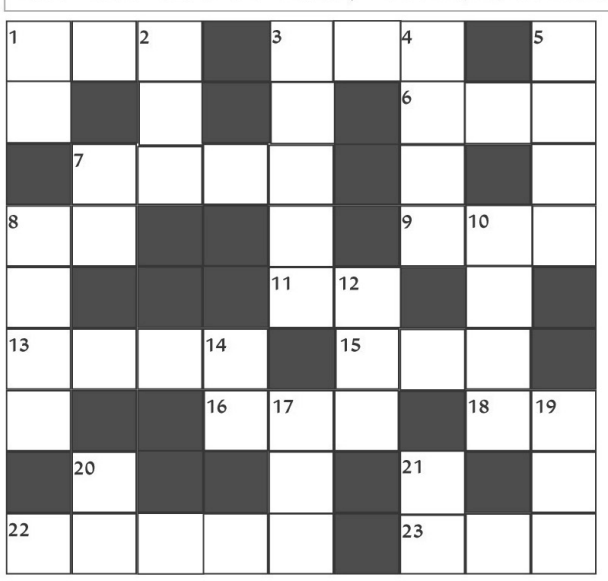

शब्द सामर्थ्य क्रमांक 118 का हल

चु	स्त		मु		सं	स्था	न	
ग		म	र्दा	न	गी		त	म
ली	प	ना			त	न		
	ना	ना					ज	
मा	ह		रा		सा	ज	न	
न		स	ह	दे	व		म	द
व		म		व	न	ज		ल
ता	क	त	व	र		मी		द
	ल	ल	क		क	र	त	ल

कल्कि 2898 एडी की ओटीटी पर 375 करोड़ में हुई रिकॉर्ड ब्रेकिंग डील

सालार की शानदार सफलता के बाद प्रभास के खाते में एक और बेहतरीन फिल्म कल्कि 2898 एडी है. यह फिल्म इन दिनों जमकर सुर्खियों में बनी हुई है. नाग अश्विन के निर्देशन में बनी इस फिल्म में अमिताभ बच्चन और दीपिका पादुकोण भी नजर आने वाले हैं.

तीनों बड़े सितारों को एकसाथ पर्दे पर देखने के लिए फैंस बेताब हो रहे हैं. फिल्म को लेकर लोगों में खूब क्रेज देखने को मिल रहा है. अब इस फिल्म की रिकॉर्ड ब्रेकिंग ओटीटी डील की भी खबर सामने आ रही है. कहा जा रहा है कि ओटीटी राइट्स एक नहीं बल्कि दो प्लेटफॉर्म ने खरीदे हैं.

कल्कि 2898 एडी को नेशनल लेवल पर प्रमोट करने के लिए मेकर्स सारे पैंतरे अपना रहे हैं. फिल्म को 600 करोड़ के बिग बजट में बनाया गया है. इस फिल्म की सबसे खास कास्ट बुज्जी है, जिसकी झलक मेकर्स कुछ दिन पहले ही दिखा चुके हैं. अब फिल्म के निर्माता 600 करोड़ के भारी भरकम बजट में इस साइंस फिक्शन फिल्म ने अपने पूरे खर्चे की आधी कमाई तो ओटीटी प्लेटफॉर्म को इसके डिजिटल राइट्स बेचकर कर ली है.

फिल्मी बीट की रिपोर्ट की मानें तो प्रभास की फिल्म कल्कि 2898 एडी के ओटीटी राइट्स एक नहीं बल्कि दो बड़े ओटीटी प्लेटफॉर्म ने खरीदे हैं. नेटफ्लिक्स ने इस फिल्म के हिंदी वर्जन के राइट्स 200 करोड़ रुपये में खरीदे हैं. वहीं अमेजन प्राइम वीडियो ने साउथ लैंग्वेज के लिए 175 करोड़ रुपये खर्च किए हैं. अगर यह रिपोर्ट्स वाकई में सच हैं तो कल्कि 2898 एडी ने इस बिग डील के लिए साथ नया बेंचमार्क स्थापित किया है.

स्टारकास्ट की बात करें तो पहले फिल्मी बीट ने बताया था कि कल्कि 2898 एडी में दुलकर सलमान, नानी और विजय देवरकोंडा कैमियो रोल में नजर आने वाले हैं. वह इससे पहले वैजयंती मूवीज के साथ काम कर चुके हैं. वहीं कीर्ति सुरेश ने इस फिल्म के लिए विशेष रूप से डिजाइन की गई कार 'बुज्जी' में अपनी आवाज दी है. यह साइंस फिक्शन फिल्म 27 जून को दुनियाभर में रिलीज होने के लिए तैयार है.

बॉक्स ऑफिस पर मिस्टर एंड मिसेज माही की दैनिक कमाई में मामूली बढ़त

शरन शर्मा के निर्देशन में बनी फिल्म मिस्टर एंड मिसेज माही में जाह्नवी कपूर और राजकुमार राव की जोड़ी नजर आ रही है।दोनों की शानदार केमिस्ट्री ने दर्शकों का दिल जीत लिया है। इससे पहले दोनों फिल्म रूही में साथ काम कर चुके हैं।पिछले कुछ दिनों से मिस्टर एंड मिसेज माही की दैनिक कमाई में काफी उतार-चढ़ाव देखने को मिल रहा है। मिस्टर एंड मिसेज माही में कुमुद मिश्रा, राजेश शर्मा और जरीना वहाब जैसे कलाकारों ने भी अभिनय किया है। करण जौहर इस फिल्म के निर्माता हैं। जाह्नवी जल्द रोशन मैथ्यू, गुलशन देवैया और आदिल हुसैन के साथ फिल्म उलझ में नजर आएंगी।फिल्म देवरा के जरिए जाह्नवी साउथ में डेब्यू करने जा रही हैं। यह फिल्म 10 अक्तूबर, 2024 को रिलीज होगी।वरुण धवन के साथ सनी संस्कारी की तुलसी कुमारी भी जाह्नवी के खाते से जुड़ी है।उधर, राजकुमार जल्द स्त्री 2 में दिखाई देंगे। करण जौहर की फिल्म विक्की विद्या का वो वाला वीडियो भी राजकुमार के पास है। बॉक्स ऑफिस पर मिस्टर एंड मिसेज माही का सामना राजकुमार राव की फिल्म श्रीकांत, शरवरी वाघ की फिल्म मुंज्या और मनोज बाजपेयी की फिल्म भैया जी से हो रहा है।दिव्या खोसला कुमार, हर्षवर्धन राणे और अनिल कपूर जैसे सितारों की अदाकारी से सजी फिल्म सवी-ए ब्लडी हाउसवाइफ भी इन दिनों सिनेमाघरों में लगी हुई है।

30 करोड़ के पार हुई शरवरी वाघ की फिल्म

आदित्य सरपोतदार के निर्देशन में बनी फिल्म मुंज्या को सिनेमाघरों में रिलीज हुए एक सप्ताह पूरा होने जा रहा है और यह अपनी पकड़ मजबूत बनाए हुए है।इस फिल्म में मोना सिंह, अभय सिंह और शरवरी वाघ जैसे कलाकार मुख्य भूमिका में हैं, जिनकी अदाकारी दर्शकों को पसंद आ रही है।मुंज्या शुरुआत से बॉक्स ऑफिस पर उम्मीद से अच्छा प्रदर्शन कर रही है। हालांकि, पिछले कुछ दिनों से इस फिल्म की दैनिक कमाई में गिरावट जारी है। अब मुंज्या के कमाई के आंकड़े भी सामने आए हैं, जो अब तक का सबसे कम कारोबार है।बॉक्स ऑफिस ट्रैकर सैकनिल्क की रिपोर्ट के मुताबिक, मुंज्या ने बुधवार (छठे दिन) को 3.75 करोड़ रुपये का कारोबार किया, जिसके बाद इसका कुल बॉक्स ऑफिस कलेक्शन 31.15 करोड़ रुपये हो गया है।मुंज्या ने 4 करोड़ रुपये के साथ बॉक्स ऑफिस पर अच्छी शुरुआत की थी।बता दें फिल्म में वरुण धवन ने मेहमान की भूमिका निभाई है। मुंज्या के बाद शरवरी फिल्म वेदा में नजर आएंगी। इस फिल्म में जॉन अब्राहम मुख्य भूमिका में दिखाई देंगे। तमन्ना भाटिया और अभिषेक बनर्जी जैसे सितारे भी इस फिल्म अहम हिस्सा हैं।फिल्म की कहानी असीम अरोड़ा ने लिखी है। मोनिशा अडवाणी और मधु भोजवानी इसके निर्माता हैं।वेदा 15 अगस्त, 2024 को सिनेमाघरों में दस्तक देने के लिए तैयार है। बॉक्स ऑफिस पर इस फिल्म का सामना अल्लू अर्जुन की फिल्म पुष्पा 2 से होगा।

थाई स्लिट स्कर्ट पहन हिना खान ने कराया बोल्ड फोटोशूट

टीवी एक्ट्रेस हिना खान इन दिनों अपनी लेटेस्ट फोटोशूट की तस्वीरों के कारण सोशल मीडिया पर छाई हुई हैं। एक्ट्रेस जब भी अपनी फोटोज इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो फैंस उनकी तस्वीरों पर अक्सर अपना दिल हार जाते हैं। हाल ही में एक्ट्रेस ने अपने लेटेस्ट ग्लैमरस फोटोशूट की तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट की हैं। इन तस्वीरों में उनका गॉर्जियस अंदाज देखकर फैंस आहें भरते हुए नजर आ रहे हैं।

एक्ट्रेस हिना खान जब भी अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम अकाउंट पर पोस्ट करती हैं तो फैंस अक्सर उनके हर एक लुक पर अपना दिल हार जाते हैं।

हाल ही में एक्ट्रेस ने अपनी लेटेस्ट फोटोशूट की बेहद शानदार तस्वीरें शेयर की हैं, जिसमें वो बेहद ही खूबसूरत नजर आ रही हैं।

हिना खान ने इस फोटोशूट के दौरान व्हाइट कलर की जैकेट और थाई स्लिट स्कर्ट पहनी हुई है, जिसमें वो अपना परफेक्ट फिगर फ्लॉन्ट करती हुई नजार आ रही हैं।

ओपन हेयर, हाई हील्स, कानों में इयररिंग्स और न्यूड मेकअप कर के एक्ट्रेस हिना खान ने अपने आउटलुक को कंप्लीट किया है।

बता दें, एक्ट्रेस जब भी अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम अकाउंट पर पोस्ट करती हैं तो फैंस उनकी तस्वीरों पर जमकर लाइक्स और कॉमेंट्स के जरिए अपने रिएक्शंस देते हैं।

हालांकि इन तस्वीरों में भी यूजर्स ने जमकर अपना प्यार बरसाया है। एक यूजर ने लिखा है- टू मच हॉट। वहीं दूसरे यूजर ने लिखा है- लुकिंग किलर बेब। तीसरे यूजर ने लिखा है- सो ग्लैमरस।

हिना खान सोशल मीडिया पर काफी एक्टिव रहती हैं। इंस्टाग्राम पर उनकी फैन फॉलोइंग लिस्ट काफी ज्यादा तगड़ी है।

श्वेता तिवारी ने 43 की उम्र में फैंस के बीच शेयर किया समर लुक, एक्ट्रेस की हॉटनेस देख यूजर्स हुए घायल

एक्ट्रेस श्वेता तिवारी आए दिन अपनी बोल्ड तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट कर फैंस का सारा ध्यान अपनी ओर खींच लेती हैं। उनकी हर एक फोटोज सोशल मीडिया पर आते ही बवाल मचाने लगती हैं। हाल ही में एक्ट्रेस श्वेता तिवारी ने अपने लेटेस्ट समर लुक में तस्वीरें शेयर की हैं। इन तस्वीरों में एक्ट्रेस बेहद ही सेक्सी और स्टनिंग नजर आ रही हैं। टीवी एक्ट्रेस श्वेता तिवारी ने हाल ही में अपनी लेटेस्ट समर लुक्स की तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट की हैं। इन तस्वीरों में उनका क्यूट लुक देखकर फैंस अपने होश खो बैठे हैं। एक्ट्रेस जब भी अपनी तस्वीरें इंस्टाग्राम पर पोस्ट करती हैं तो फैंस उनकी तस्वीरों पर अक्सर दिल हार जाते हैं। हालांकि इन तस्वीरों में भी कुछ ऐसा ही देखने को मिल रहा है।

श्वेता तिवारी ने अपनी इन फोटोज को क्लिक करवाते हुए कैमरे के सामने खूबसूरत अंदाज में स्माइल देते हुए पोज दिए हैं। ब्लैक एंड व्हाइट फ्लोरल लुक में शॉर्ट ड्रेस पहनकर एक्ट्रेस श्वेता तिवारी ने अपने आउटलुक को कंप्लीट किया है। इन तस्वीरों में एक्ट्रेस का समर लुक लोग उनके स्टाइल की तारीफ करते नहीं थक रहे हैं। बता दें कि, श्वेता तिवारी ने 43 साल की उम्र में भी खुद को काफी मेंटेंन कर के रखा हुआ है।

धैर्य से ही जीवन में खुशहाली की राह

देवेन्द्रराज सुथार

आधुनिक प्रतिस्पर्धा युक्त माहौल में अधिकाधिक धनोपार्जन एवं उत्तम सुख साधनों को प्राप्त करना जीवन का ध्येय हो गया है। जीवन से धैर्य गायब हो गया है। धैर्य ही समस्त सुखों का और लोभ समस्त दुखों का मूल कारण है। मनुष्य के मन में धैर्य होना स्वर्ग की प्राप्ति से भी बढ़कर है। यदि मन में धैर्य भली-भांति प्रतिष्ठित हो जाए तो उससे बढ़कर संसार में कुछ भी नहीं है। जैसे जल के बिना नाव कितने भी उपाय करने पर नहीं चल सकती, उसी प्रकार सहज धैर्य बिना कभी शांति नहीं मिल सकती।

धैर्य मानव जीवन का पर्याय है। लेकिन संसार के समस्त सुखों को त्याग कर धैर्य को परम सुख मानकर आदर्श स्थापित करना सरल नहीं है। सब सुख पाने के बाद भी धैर्य न आने पर जीवन अशांत बन जाता है। कष्ट, भूख और विपन्नता में रहने के बावजूद धैर्य में परम आनंद मिलता है। धैर्य और सहनशीलता के कारण ही भारतीय संस्कृति अत्यंत उदात्त और गरिमा मंडित है। केवल संपन्नता और धन की खोज करने वाले धैर्य की झलक से अपना व्यक्तित्व दूर रखते हैं।

मन में धैर्य आ जाने मात्र से हम संतुष्ट व आशावादी हो जाते हैं। आशावादी दृष्टिकोण से हम निराशा और चिंता से मुक्त हो जाते हैं। हमारे सभी दुख मिट जाते हैं, हम शांति से सोते हैं, खुशी-खुशी जागते हैं। हमारे हृदय में प्रेम और करुणा भरी रहती है और हमें असीम शांति का अहसास होता है। धैर्य के बिना मनुष्य निराशावादी हो जाता है और खुद को कोसता रहता है। अपनी इच्छाओं को पूर्ण करने के लिए कार्यरत रहें और अपनी गुणवत्ता के स्तर को सुधारने के लिए प्रयासरत रहें। जिसके मन में धैर्य है, उसके लिए सब जगह संपन्नता है।

संत सुकरात के घर सवेरे से शाम तक सत्संग के लिए आने वालों का तांता लगा रहता था। सुकरात की पत्नी कर्कश स्वभाव की थी। वह सोचती थी कि निठल्ले लोग बेकार ही उसके घर अड्डा जमाए रखते हैं। वह समय-समय पर उनके साथ रूखा व्यवहार करती। इस बात से सुकरात को दु:ख होता। एक दिन सुकरात लोगों के साथ बतिया रहे थे कि पत्नी ने उनके ऊपर छत से गंदा पानी उलीच दिया। इतना ही नहीं, वह उन्हें निठल्ला कहकर गालियां भी देने लगी। सत्संगियों को यह उनका अपमान लगा। सुकरात को भी यह व्यवहार बुरा लगा परंतु उन्होंने बहुत धैर्य के साथ उपस्थित लोगों से कहा-आप सभी ने सुना होगा कि जो गरजता है, वह बरसता नहीं। आज तो मेरी पत्नी ने गरजना-बरसना साथ-साथ कर उपरोक्त कहावत को ही झुठला दिया है। सुकरात के विनोद भरे ये शब्द सुनते ही तमाम लोगों का क्रोध शांत हो गया। वे पुन: सत्संग में लिप्त हो गए। सुकरात का धैर्य देखकर उनकी पत्नी चकित रह गई। उसी दिन से उसने अपना स्वभाव बदल दिया और आने वाले लोगों का सत्कार करने लगी।

महात्मा गांधी के जीवन की कई घटनाओं से धैर्य का प्रत्यक्ष उदाहरण मिलता है। जब पहली बार उन्हें दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की नीति के कारण ट्रेन से उतारा गया तो उन्होंने तुरंत ही उसकी प्रतिक्रिया नहीं की। उन्होंने उस अधिकारी के साथ उलझना सही नहीं समझा बल्कि उस परिस्थिति को समझा और पाया कि इसके पीछे का कारण रंगभेद की नीति है और जब तक इस नीति के ऊपर प्रहार नहीं किया जाता, ऐसी घटनाओं को रोका नहीं जा सकता है। उन्होंने इसके लिए योजना बनाई और फिर संघर्ष शुरू किया। हालांकि, उन्हें लंबा संघर्ष करना पड़ा लेकिन उन्होंने धैर्य नहीं खोया और उसी धैर्य ने उन्हें सफलता दिलाई।

मशीनीकरण के आधुनिक युग में व्यक्ति त्वरित परिणाम की लिप्सा का शिकार हो चुका है। बटन दबाकर चीजों को हाजिर करने की प्रवृत्ति ने व्यक्ति को अधीर बना दिया है। अब हम चुटकियों में सारे काम निपटाना चाहते हैं। वस्तुत: अब हममें धैर्य नहीं रहा। धैर्य के अभाव में हम समस्त ऊर्जा खर्च करने के बाद भी लक्ष्य तक नहीं पहुंच पा रहे हैं। थक हारकर हम निराशा के गर्त में समा रहे हैं। यदि परिणाम तुरंत न आए तो हमारी उत्तेजना बढ़ जाती है। अधीरता ने हमारे विवेक को हर लिया है। अत: हमारी उत्कंठा हमारे सफलता के मार्ग में विघ्न डाल रही है।

बिना धैर्य के सफलता के लिए किए गए प्रयास निराशा में तबदील होकर हमें थका देंगे। हर काम अपने निश्चित समय पर पूर्ण होता है। भले ही माली पौधे की बार-बार सिंचाई इस आस में करे कि उसे फल तुरंत मिल जाएगा तो ये व्यर्थ उपक्रम है। फल ऋतु यानी समय आने पर ही मिलना संभव है। अत: हमें धैर्य धारण करना चाहिए। धैर्य विषम परिस्थितियों में लड़ने का अचूक बाण है। धैर्य की शक्ति हमें कभी निराश नहीं होने देती तथा मंजिल तक पहुंचाने का सामर्थ्य रखती है। धैर्य वह मित्र है जो कभी हमें धोखा नहीं देता।

वीजा नियमों में बदलाव से छात्रों के सामने नई समस्या

अरूण शर्मा

हर वर्ष भारत से लाखों विद्यार्थी उच्च शिक्षा के लिए आस्ट्रेलिया, कनाडा, अमेरिका, ब्रिटेन आदि देशों में जाते हैं। कुछ समय पहले तक उन देशों में विदेशी छात्रों के लिए नियम-कायदों में ज्यादा सख्ती नहीं थी, इसलिए वहां जाने को लेकर एक आकर्षण रहा। मगर पिछले कुछ वर्षों में वैश्विक स्तर पर बदले कूटनीतिक समीकरण और पढ़ाई, रोजगार तथा अन्य वजहों से दूसरे देशों में ठौर खोजने वालों की बढ़ती भीड़ ने जो नई परिस्थिति पैदा की, उसमें उच्च शिक्षा का आकर्षण माने जाने वाले कुछ देशों ने अपने यहां वीजा नियमों में तेजी से तब्दीली की है।

नतीजतन, अब उन देशों में जाकर पढ़ाई करने का सपना पालने वाले युवाओं और उनके परिवारों के लिए हालात सहज नहीं रहने वाले हैं। दरअसल, आस्ट्रेलिया ने अब अपनी वीजा नीति में कुछ ऐसे सख्त मानदंड तय किए हैं, जिससे पढ़ाई के मकसद से वहां जाने वाले भारतीय विद्यार्थियों के सामने एक नई मुश्किल खड़ी हो गई है। नई नीति का असर ऐसे विद्यार्थियों पर भी पड़ने वाला है, जो वहां केवल अच्छी शिक्षा के लिए जाना चाहते हैं।

दरअसल, आस्ट्रेलिया अपने वीजा नियमों को इसलिए सख्त बना रहा है कि वहां जाने वाले कई विदेशी युवा किसी शिक्षण संस्थान में दाखिला लेने के बाद वहीं कोई नौकरी भी शुरू कर देते हैं। इसे पढ़ाई के नाम पर नौकरी के लिए पिछले दरवाजे से प्रवेश के तौर पर देखा गया। इस तरह वहां जाने वालों की संख्या में जब ज्यादा बढ़ोतरी देखी गई तो आस्ट्रेलिया ने वार्षिक प्रवासन की संख्या घटा कर आधा कर दिया।

इस वजह से दिसंबर 2022 के बाद एक वर्ष में भारतीय विद्यार्थियों को दिए जाने वाले वीजा में अड़तालीस फीसद की गिरावट देखी गई। यह एक बड़ा नीतिगत बदलाव है, जिसका नुकसान ऐसे भारतीय युवाओं के भविष्य पर भी पड़ेगा, जो आस्ट्रेलिया के किसी अच्छे शिक्षण संस्थान में दाखिला लेना चाहते हैं। निश्चित तौर पर यह निराशाजनक है, मगर इसके समांतर यह भी तथ्य है कि क्या भारत में शिक्षा का स्तर आस्ट्रेलिया या कनाडा जैसे देशों के बराबर नहीं हो सकता, ताकि हमारे विद्यार्थियों को किसी अन्य देश में जाने की नौबत ही न आए!

सू- दोकू क्र.119

	9			2				1
		5	1				3	
7				9		8		5
	8		3		7		5	
2		7				1		3
	4			1			8	
6		2			9			
	5		7			3		
		8		5			6	7

नियम

1. कुल 81 वर्ग है,जिसमें 9वर्गो का एक खंड बनता है।
2. हर खाली वर्ग में 1से 9 के बीच का कोई एक अंक भर सकते है।
3. बाएं से दाएं और उपर से नीचे के प्रत्येक कालम,कतार और खंड में 1से9अंक में से किसी भी अंक का इस्तेमाल एक बार ही कर सकते है।

सू-दोकू क्र.118 का हल

7	8	2	6	3	1	4	5	9
6	4	1	8	5	9	2	7	3
9	3	5	4	7	2		1	8
2	6	3	1	9	7	5	8	4
5	7	8	3	6	4	1	9	2
1	9	4	5	2	8	7	3	6
4	5	7	2	8	3	9	6	1
3	1	6	9	4	5	8	2	7
8	2	9	7	1	6	3	4	5

सफर में सफरिंग से क्या डरना!

जोगा सिंह

अगर एक आम भारतीय और एक यूरोपियन शिमला जाएंगे तो वे वहां क्या करेंगे? कुछ भारतीय युवाओं के बारे में मैं अच्छे से जानता हूं इसलिए बता सकता हूं कि वे सबसे पहले एक महंगा होटल तलाशेंगे और फिर रूम बुक करेंगे। फिर खाने का ऑर्डर देंगे, छककर महंगी शराब पीकर सो जाएंगे। सुबह उठकर वापिस घर चले जाएंगे। पैसे की बर्बादी के साथ बस इतना ही था उनका घूमना और एंजॉय!

अब समझिए कि एक यूरोपियन वहां क्या करेगा? वह किसी पहाड़ की चोटी पर चढ़ जाएगा और अपना टेंट गाड़ देगा। वह रातभर उस पहाड़ की चोटी पर बर्फीली हवाओं के संग रहेगा। इस बीच हो सकता है कि वहां बारिश भी हो जाए, तूफान भी आ जाए लेकिन वह हर चीज को एंजॉय करेगा। सुबह सूरज की पहली किरण के साथ फोटो या विडियो भी शूट करेगा। इस बीच, जो भी उसके पास खाने और पीने के लिए है उसी से काम चलाएगा। यह भी संभव है कि वह वहां खींचे फोटो या विडियो को बेचकर वह अपने टूर का कुछ खर्चा भी निकाल ले। वहां अपनी हर गतिविधि में उसे जोखिम उठाना पड़ सकता है लेकिन वह उसके लिए मानसिक और शारीरिक रूप से तैयार होकर आया है। अब ध्यान देने वाली बात यह है कि भारतीय युवक के जीवन में सब कुछ पहले से ही निश्चित था। उसने एक तरह के बने बनाए रूल के आधार पर अपना आनंद निश्चित किया था। उसकी जिंदगी में सब कुछ पहले से सेट था। कितना महंगा होटल लेना है? होटल उसके लिए कितना सुरक्षित है? रूम हीटर है या नहीं? बाथरूम में गर्म पानी आता है या नहीं? मेन्यू में से कौन-कौन-सा खाना ऑर्डर करना है? सुबह ब्रेकफास्ट में क्या लेना है? और कमरा कितने बजे चेक आउट करना है?

जीवन में जब हर चीज निश्चित होती है तो हम उसी के मुताबिक चलते हैं। तब खुद को उससे बाहर नहीं निकाल पाते? जबकि पहाड़ की चोटी पर उस यूरोपियन की जिंदगी में कुछ भी निश्चित नहीं है। ज्यों ही वह फैसला करता है कि मैं होटल में न रहकर किसी पहाड़ की चोटी पर रहूंगा, तभी से उसकी जिंदगी में मुश्किलें भी बढ़ जाती हैं। उसका दिमाग एक कमांडो की तरह चारों दिशाओं में दौड़ने लगता है कि कौन-सी चोटी मेरे लिए ठीक रहेगी? चोटी कितनी ऊंची होनी चाहिए? वहां कौन सी मुश्किलें आएंगी और उनका कैसे डटकर मुकाबला करना है? यूरोपियन के मन में तनाव पैदा होगा और उसको इसके लिए बहुत सोचना पड़ेगा। अब बताइये कि आगे की तरफ कौन देख रहा है?

दूसरी तरफ, उस भारतीय युवा के मन में कोई तनाव नहीं। वह रातभर नशे में रहेगा और उसे पता भी नहीं चलेगा कि वह कहां सोया हुआ है? जब वह होटल से निकलेगा तो उसे यह लगेगा कि कोई फायदा नहीं हुआ यहां आने का क्योंकि मुझे तो कोई नया अनुभव हुआ ही नहीं। कुछ भी हासिल नहीं हुआ। उसके जीवन में कुछ नया घटित नहीं हुआ, कोई नया विचार पैदा नहीं हुआ।

जबकि यूरोपियन को रात में इतने फैसले लेने पड़े, इतनी चुनौतियों का सामना करना पड़ा जिससे जीवन के प्रति उसकी नई समझ पैदा हो गई क्योंकि उसका अनुभव अद्भुत रहा। उसने आज जीवन के प्रति एक नई खोज की क्योंकि वह पहले से ज्यादा बौद्धिक हो गया। उसके अंदर आत्मविश्वास, हौसला, निडरता जैसे गुणों की बढ़ोतरी हो गई। तो फिर बताइए कि यहां असल आध्यात्मिक कौन है?

यूरोपियन को जो नशा हुआ वह नशा कभी नहीं उतरेगा। अब आप ही बताओ कि धार्मिक ग्रंथों वाला आनंद उस यूरोपियन ने लिया या भारतीय युवक ने? दोनों में से अध्यात्म के पनपने के अवसर किस में ज्यादा हैं? मेरे हिसाब से, अध्यात्म का मतलब आत्मा का ज्ञान, खुद के ज्ञान से है। अब खुद का ज्ञान होटल में एंजॉय करने से ज्यादा होगा या पहाड़ की चोटी पर संघर्ष करने से? किसी भी काम और उसके प्रबंधन को बेहतर करते रहने की स्थिति को अध्यात्म कहते हैं। लेकिन हम लोग बेहतर करने की बजाय उसे दोहराने लगते हैं। इससे जीवन में मौलिकता खत्म हो जाती है और जीवन कर्मकांड में बदल जाता है। फिर कर्मकांड पाखंड में बदल जाते हैं और यही पाखंड आने वाली पीढ़ियों के लिए एक परंपरा बन जाते हैं।

अडानी गुप्र के प्रतिनिधि मण्डल ने की कैबिनेट मंत्री जोशी से मुलाकात

हमारे संवाददाता

देहरादून। कृषि एवं कृषक कल्याण मंत्री गणेश जोशी से अडानी गुप्र के प्रतिनिधि मण्डल ने आज शिष्टाचार भेंट की। इस दौरान प्रतिनिधिमण्डल द्वारा कृषि मंत्री के समक्ष उत्तराखण्ड में कृषि एवं उद्यान के क्षेत्र में लगभग रूपये 500 करोड निवेश करने की इच्छा प्रकट की। उनके द्वारा मुख्य रूप से कृषि एवं उद्यान के उपजों के भण्डारण के क्षेत्र में निवेश करने की बात की गई। कृषि मंत्री गणेश जोशी ने खुशी जताते हुए प्रतिनिधि मंडल को सरकार की तरफ से सकारात्मक आश्वासन देते हुए शीघ्र मामले में कार्यवाही का भरोसा दिलाया।

कृषि मंत्री गणेश जोशी ने कहा कि उत्तराखण्ड राज्य की भौगोलिक परिस्थितियां एवं कृषि जलवायु क्षेत्र, विभिन्न औद्यानिक फसलों के उत्पादन हेतु अत्यधिक अनुकूल है, जिसके दृष्टिगत राज्य में औद्यानिकी की अपार सम्भावनाएं विद्यमान हैं।

उन्होंने कहा कि निवेश अनुकूल नीतियों के परिणामस्वरूप आज उत्तराखण्ड निवेशकों के लिए प्रत्येक क्षेत्र में एक नए केन्द्र बिंदु के रूप में उभर रहा है। इस दौरान प्रदेश में कृषि एवं उद्यान के क्षेत्र में निवेश की अपार संभावनाओं पर चर्चा हुई। इस प्रतिनिधि मण्डल में हेड कॉरपोरेट अफेयर्स (नार्थ) आनन्द सिंह भसीन, जनरल मैनेजर आर.के. पाण्डे, एम.डी. आर्गेनिक बोर्ड विनय कुमार आदि उपस्थित रहे।

मुखर्जी के लिए देश की अखंडता से बढ़कर नही था कुछः रेखा आर्य

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। उत्तराखंड सरकार में कैबिनेट मंत्री रेखा आर्या आज विधानसभा मंगलौर(जनपद हरिद्वार)स्थित राजा महेंद्र प्रताप कॉलेज पहुंचीं , जहाँ जिलाध्यक्ष और पार्टी के कार्यकर्ताओं ने कैबिनेट मंत्री का स्वागत किया। यहां उन्होंने भारतीय जनता पार्टी के संस्थापक डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के बलिदान दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में शिरकत की और उन्हें पुष्पांजलि अर्पित कर श्रद्धांजलि अर्पित की।

कैबिनेट मंत्री रेखा आर्य ने कहा कि श्रद्धेय डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के लिए देश की अखंडता और एकता से बढ़कर कुछ नहीं था। एक निशान, एक विधान, एक प्रधान के लिए उन्होंने अपने प्राणों तक की आहुति दी। राष्ट्र-कल्याण से लेकर शिक्षा और औद्योगिक क्षेत्र के विकास के लिए उनके विचार सदैव प्रेरणा देते रहेंगे साथ ही उनके विराट योगदान को देश कभी भुला नहीं पायेगा।

इस अवसर पर जिलाध्यक्ष शोभाराम प्रजापति, विधायक प्रदीप बत्रा, महिला मोर्चा जिलाध्यक्ष प्रतिभा पाटिल, पूर्व राज्यमंत्री वीरेंद्र सैनी ,सह संयोजक दिनेश कुमार, महामंत्री अरविंद गौतम ,मंडल अध्यक्ष राजीव राणा, विधानसभा प्रभारी अजीत सिंह, सुरवीर मलिक , जिला पंचायत सदस्य पवन सिंह सैनी सहित पार्टी कार्यकर्ता उपस्थित रहे।

श्री जगन्नाथ की 27वें देवस्थान पूर्णिमा पर महासमारोह का आयोजन

संवाददाता

देहरादून। श्री राम मन्दिर दीपलोक में श्री जगन्नाथ के 27वें देवस्नान पूर्णिमा पर विष्णुभक्तों ने महासमारोह का आयोजन किया।

आज यहां श्री राम मन्दिर, दीपलोक, बल्लूपुर रोड, देहरादून मे, श्रीजगन्नाथ पुरी, ओडिशा की तर्ज पर, श्रीजगन्नाथ की 27वाँ देवस्नान पूर्णिमा (ज्येष्ठ पूर्णिमा) हजारों विष्णुभक्तों द्वारा, महासमारोह मे मनाया गया। प्रातः साढे सात बजे सौभाग्यवती नारीयों द्वारा 108 कलस तीर्थजल (मान सरोवर, गोमुख, गंगोत्री, त्रीबेणी संगम और हरिद्वार ब्रह्मकूण्ड) का पवित्र जल, हरिनाम संकीर्तन, घण्टनाद, गाजाबाजा के साथ श्री राम मन्दिर, दीपलोक लाया गया। श्रीजगन्नाथ, श्रीबलभद्र, श्रीसुभद्रा और श्री सुदर्शन को रत्नसिंहासन से प्रातः 9:00 बजे पहुण्डिबिजे कराकर (चला चला कर) स्नान मण्डप को हरिबोल, जय श्री जगन्नाथ स्वामी भक्तों द्वारा बोल-बोल कर पहुँण्डिबिजे कराया गया। शक्तिपुत्र पं. (डॉ.) सुबास चन्द्र शतपथी एवं श्रीराम मन्दिर के पं. पुरुषोत्तम डिमरी द्वारा सहस्त्राक्ष वेदमन्त्र पाठ कराकर प्रातः साढे नौ बजे कपूर, चन्दन, केशर, तुलसी मिश्रित तीर्थजल से श्री बलभद्र को 33 कलस , श्रीजगन्नाथ को 35 कलस, श्री सुभद्रा को 22 कलस एवं श्रीसुदर्शन को 18 कलस से हजारों भक्तों द्वारा स्नान कराया गया। स्नान के उपरान्त प्रातः 11 बजे श्रीजगन्नाथ एवं श्रीबलभद्र को श्री बिघ्न विनाशक श्री गणेश रूप मे सजाया गया। चतुर्द्धा मूर्त्तियों का दशअवतार महाआरती हुआ। सुबह साढे ग्यारह बजे श्रीजगन्नाथ का प्रिय कानिका महाप्रसाद वितरण किया गया। पुनः सांय आठ बजे चतुर्द्धा मूर्तियों को पहुण्डिबिजे कराकर स्नान वेदी से रत्नसिहांसन को लिया जायेगा। दशअवतार आरती होकर दरवाजा (पट) बंन्द कर दिया जायेगा। जगत के नाथ असुस्थ हो जायेंगे। 14 दिन के बाद 6 जुलाई-2024 शनिवार को प्रभु भाई बहन के साथ दशअवतार आरती के साथ नवयौबन स्वरूप मे दर्शन देंगे। 7 जुलाई-2024 रविवार प्रातः नौ बजे श्रीजगन्नाथ भाई बहन के साथ नन्दिघोष बिराजमान होकर भक्तों से मिलने के लिये नगर परिक्रमा के लिये निकलेंगे। इस देवस्नान पूर्णिमा मे विशेष रुप से श्री राम मन्दिर समिति अध्यक्ष, आर. के. गुप्ता, सचिव अरविन्द मित्तल, उत्सव मन्त्री अनिल आनन्द, कोषाध्यक्ष सुनील गोयल, अनुराग गुप्ता, जे एस चुग, प्रमोद गुप्ता, संजय गर्ग, संजीव गोयल, मनोज शर्मा, मनीष मौर्य, समस्त श्रीजगन्नाथ युवा सेना मण्डल, श्रीराम मन्दिर महिला मण्डली, पृथ्वीनाथ मन्दिर सेवादल, देहरादून का समस्त आध्यात्मिक संस्था, सामाजिक संस्था एवं शहर का समस्त विष्णुपेमी श्रीजगन्नाथ भक्तों ने देवस्नान यात्रा के लिये सहयोग किया।

सैकड़ो पर्यावरण प्रेमियों ने निकाली 'पर्यावरण बचाओ पदयात्रा'

कार्यालय संवाददाता

देहरादून । दून में हरे पेड़ों को विकास की भेंट चढ़ने से कैसे रोका जाए, इसी संकल्प के साथ आज दिलाराम बाजार से सेंट्रियो मॉल तक पर्यावरण बचाओ पदयात्रा निकाली गई। पदयात्रा में कई विभिन्न संगठनों के पर्यावरण प्रेमी एकत्रित हुए। पर्यावरण प्रेमियों ने कहा कि हरियाली को होने वाले नुकसान से देहरादून का तापमान लगातार बढ़ रहा है। यहां के बाग-बगीचे खत्म हो गए और जलस्रोत सूख गए हैं।

नदी-नालों पर अतिक्रमण हो गया है। सड़कों के चौड़ीकरण के लिए पेड़ों को काटा जा रहा है। सरकार को पेड़ों को काटने से बचाना होगा। पर्यावरणविद् रवि चोपड़ा कहते हैं, अगर इसी तरह पेड़ों को काटा जाता रहा तो 2047 में विकसित भारत बनने का सपना तो छोड़िए 2037 तक ये दून घाटी हरियाली विहीन हो जाएगी। यह पदयात्रा इसी संकल्प के साथ निकाली गई है।

दून में मानसिक स्वास्थ्य केंद्र 'थ्राइविंग माइंड्स' की हुई शुरुवात

कार्यालय संवाददाता

देहरादून। आज से देहरादून में मानसिक स्वास्थ्य केंद्र थ्राइविंग माइंड्स की हुई शुरुवात। डॉ. अंकिता प्रियदर्शिनी और डॉ. देवांशु अरोड़ा की दूरदर्शी संस्थापक टीम द्वारा संचालित यह केंद्र मानसिक स्वास्थ्य चुनौतियों का सामना करने वाले व्यक्तियों और परिवारों के लिए आशा और उपचार का प्रतीक बनेगा।

उद्घाटन समारोह में डॉ. बलदेव राज, वरिष्ठ छाती रोग विशेषज्ञ और पीजीआईएमएस, रोहतक के पूर्व विभागाध्यक्ष, जिन्होंने कई प्रशंसाएं और शोध किए हैं और अपने युग के एक प्रतिष्ठित चिकित्सक हैं, ने मुख्य अतिथि के रूप में शिरकत की। इस अवसर पर शहर के कई वरिष्ठ डॉक्टरों ने भाग लिया और केंद्र की अनूठी अवधारणा और मानसिक स्वास्थ्य देखभाल के प्रति इसकी प्रतिबद्धता की प्रशंसा की।

डॉ. अंकिता प्रियदर्शिनी, कंसल्टेंट साइकियाट्रिस्ट और बिहेवियरल मेडिसिन विशेषज्ञ, थ्राइविंग माइंड्स की क्लिनिकल हेड के रूप में कार्य करेंगी। डॉ. अंकिता मैक्स सुपर स्पेशियलिटी हॉस्पिटल, देहरादून में भी विजिटिंग कंसल्टेंट हैं और वे उत्कृष्ट क्लिनिकल देखभाल सुनिश्चित करती हैं। डॉ. देवांशु अरोड़ा व्यापार और प्रशासन का नेतृत्व करेंगे, जिससे सभी के लिए सुचारू संचालन और पहुंच सुनिश्चित हो सके।

थ्राइविंग माइंड्स मानसिक स्वास्थ्य सेवाओं की एक व्यापक श्रृंखला प्रदान करने के लिए जाना जाता है, जिसमें मनोचिकित्सा, थेरेपी, काउंसलिंग, और नशामुक्ति उपचार शामिल हैं, जो टीएमएस और टीडीसीएस जैसी उन्नत तकनीकों का उपयोग करते हैं। यह केंद्र सभी आयु वर्गों - वयस्कों, किशोरों और बुजुर्गों - की मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं का समाधान करता है जैसे कि अवसाद, चिंता, द्विध्रुवी विकार, सिजोफ्रेनिया, ओसीडी, पीटीएसडी, व्यक्तित्व विकार, और बचपन एवं किशोरावस्था की मानसिक समस्याएं। थ्राइविंग माइंड्स का माहौल शांत और सुखद है, जो उपचार और पुनर्प्राप्ति के लिए अनुकूल है, और साथ ही सहानुभूति और समझ के साथ गुणवत्ता देखभाल सुनिश्चित करता है। यह समग्र दृष्टिकोण देखभालकर्ताओं को अनुभवी और समर्पित मानसिक स्वास्थ्य पेशेवरों की टीम के मार्गदर्शन में सबसे उपयुक्त उपचार चुनने की अनुमति देता है।

एक नजर

80 की उम्र में पिता बना मलेशिया के योब अहमद

नई दिल्ली। मलेशिया के 80 वर्षीय सेवानिवृत्त योब अहमद और उनकी 42 वर्षीय पत्नी जालेहा जैनुल आबिदीन ने हाल ही में अपने नवजात बच्ची नूर का स्वागत किया। योब ने कहा कि उनकी उम्र में बच्चा होना एक अनपेक्षित घटना थी, लेकिन वे इसे अल्लाह का उपहार मानते हैं। रिपोर्ट के अनुसार, योब का कहना है कि उन्होंने कभी सपने में भी नहीं सोचा था कि इस उम्र में उनका बच्चा होगा। उन्होंने कहा, ऐसा इसलिए नहीं मैं काफी 'मजबूत' हूं, बल्कि मैं तो मानता हूं कि यह सब ऊपरवाले की कृपा से हुआ है। मेरे बच्चे का जन्म एक उपहार और अल्लाह की इच्छा है। योब ने अपनी खुशखबरी टिकटॉक अकाउंट पर साझा की, जिसमें उन्हें नवजात शिशु के सामने प्रार्थना करते हुए देखा जा सकता है।

उन्होंने बताया कि उनकी बढ़ती उम्र को देखते हुए बच्चा पैदा करने की योजना नहीं थी, क्योंकि पिछली शादी से पहले से ही उनके चार बच्चे बड़े हो चुके हैं। वहीं, पत्नी जालेहा का कहना है कि उनके और योब के बीच बच्चे के बारे में कोई चर्चा नहीं हुई, जबकि उनकी शादी को 10 साल हो गए हैं। जालेहा को पांच साल पहले गर्भपात हुआ था। वह सोचती थीं कि वह पहले से ही रजोनिवृत्ति में है। लेकिन जब फिर से खुद के गर्भवती होने की खबर सुनी, तो पहले तो चौंक गईं फिर उन्होंने इसे भाग्य का एक मोड़ माना।

सवारियों से भरी बस पेड़ से टकराई, 22 यात्री घायल

पुणे । महाराष्ट्र में पुणे में राज्य परिवहन बस बड़े हादसे का शिकार हो गई, जिसमें 20 से 22 यात्रियों के घायल होने की खबर है। हादसा यावत गांव में सहजपुर फाटा के पास हुआ, जहां परिवहन बस पेड़ से जा टकराई। इस हादसे में घायलों लोगों में से 3 लोगों की स्थिति गंभीर बताई जा रही है। जानकारी के अनुसार यह हादसा तब हुआ जब एक ट्रक से टक्कर से बचने की कोशिश में परिवहन बस पेड़ से टकरा गई। हादसे के बाद पूरे इलाके में हड़कंप मच गया। बस में लोगों की चीख पुकार मच गई। दुर्घटना की सूचना के बाद मौके पर पहुंची पुलिस ने लोगों को बस से निकाला और घायलों को इलाज के लिए लोनी कालभोर के एक निजी अस्पताल में भर्ती कराया गया। पुलिस इंस्पेक्टर नारायण देशमुख ने बताया कि यवत गांव में सहजपुर फाटा के पास बस के पेड़ से टकरा जाने से 20 से 22 यात्री घायल हो गए। 2 से 3 यात्रियों को गंभीर चोटें आई हैं, उन्हें अस्पताल ले जाया गया है। पुलिस अधिकारी के अनुसार घटना दौंड तहसील के यवत के पास सहजपुर गांव में उस समय हुई, जब बस सोलापुर जिले में पंढरपुर से मुंबई जा रही थी।

मायावती ने भतीजे आकाश आनंद को फिर घोषित किया अपना उत्तराधिकारी

लखनऊ । बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने अपने भतीजे आकाश आनंद को एक बार फिर से अपना उत्तराधिकारी घोषित किया है। आकाश आनंद को फिर से पार्टी का नेशनल कोऑर्डिनेटर भी बनाया गया है। लखनऊ में बसपा की बैठक में खुद मायावती ने इसका ऐलान किया। एक दिन पहले ही आकाश को उत्तराखंड उपचुनाव के लिए पार्टी का स्टार प्रचारक बनाया गया था। उनका नाम लिस्ट में मायावती के बाद दूसरे नंबर पर था।

मायावती ने रविवार को लखनऊ में बसपा के सभी प्रदेश प्रमुखों के साथ समीक्षा बैठक की, जिसमें आकाश आनंद भी मौजूद थे। बैठक के दौरान आकाश आनंद ने बुआ मायावती का पैर छूकर आशीर्वाद लिया। यूपी की पूर्व मुख्यमंत्री मायावती ने भतीजे के सिर पर प्यार से हाथ रखकर दुलारा और पीठ थपथपाई। बता दें कि लोकसभा चुनाव के दौरान मायावती ने अपने एक फैसले से सभी को चौंका दिया था। उन्होंने भतीजे आकाश आनंद को श्अपरिपक्व्वश बताकर पार्टी के नेशनल कोऑर्डिनेटर पद से हटा दिया था। साथ ही उन्हें परिपक्व होने तक अपना उत्तराधिकारी बनाने से भी मना कर दिया था। दरअसल, लोकसभा चुनाव के दौरान आकाश आनंद बसपा की कई सार्वजनिक रैलियों में काफी अक्रामक नजर आए। उनके कुछ भाषणों की काफी चर्चा हुई थी, जिसमें उन्होंने अपने विरोधियों पर तीखी टिप्पणियां की थीं।

मुनस्यारी बचाओ संघर्ष समिति की बनी तदर्थ कमेटी

कार्यालय संवाददाता

मुनस्यारी। चीन बॉर्डर क्षेत्र में ष्मुनस्यारी बचाओ संघर्ष समितिष् की रविवार को पहली बैठक आयोजित की गई। बैठक में 9 सदस्यीय कमेटी बनाई गई है। कमेटी समिति के लिए एसओपी तैयार करने के साथ-साथ समिति के विधिवत गठन से पूर्व 30 ग्राम पंचायत में समिति की इकाई गठित करेगी। क्षेत्र के विभिन्न मुद्दों पर बातचीत की गई। समस्याओं के समाधान के लिए आगे जन संघर्ष भी किया जाएगा। बैठक में चीन बॉर्डर क्षेत्र की उपेक्षा पर गहरा आक्रोश व्यक्त किया गया।

विकास खंड सभागार में आयोजित बैठक में मुनस्यारी बचाओ संघर्ष समिति बनाने के लिए जमा हुए विभिन्न संगठनों के पदाधिकारी के साथ पंचायत प्रतिनिधियों ने भाग लिया। बैठक में जिला पंचायत सदस्य जगत मर्तोलिया ने संघर्ष समिति की आवश्यकता जोर देते हुए कहा कि चीन बॉर्डर क्षेत्र की जबरदस्त उपेक्षा हो रही है।

शिक्षा और स्वास्थ्य बदहाल स्थिति में पहुंच गया है। शासन और सरकार के द्वारा इस क्षेत्र की समस्याओं का समाधान नहीं किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि जनता की ताकत तथा संघर्ष ही इस क्षेत्र की जनता को न्याय दिला सकती है। उन्होंने कहा कि सीमांत क्षेत्र में जिलाधिकारी, तहसीलदार, खंड विकास अधिकारी, पशु चिकित्सक, शिक्षक, मानव डॉक्टर के साथ साथ सरकारी विभाग में दर्जनों पद रिक्त है।

बैठक में तय किया गया कि समिति को सशक्त बनाने के लिए ग्राम स्तर पर

❑भूमि के खरीद फरोख्त पर रखेंगे नजर, 30 ग्राम पंचायतों में बनेगी ईकाई

समिति का ढांचा गठित होना आवश्यक है। इसके लिए ग्राम प्रधान मनोज मर्तोलिया (मल्ला घोरपट्टा), कृष्णा सिंह सयाना (तल्ला घोरपट्टा) महेश रावत (जैती) क्षेत्र पंचायत सदस्य ईश्वर सिंह कोरंगा, व्यापार संघ अध्यक्ष प्रमोद कुमार द्विवेदी, मल्ला जोहर विकास समिति के अध्यक्ष श्रीराम सिंह धर्मशक्तू, केदार सिंह मर्तोलिया, राजू पांगती को तदर्थ कमेटी का सदस्य बनाया गया है। कमेटी के संयोजक के रूप में जिला पंचायत जगत मर्तोलिया कार्य करेंगे। बैठक में तय किया गया है कि कमेटी द्वारा कार्य करने के लिए एक एसओपी का निर्माण किया जाएगा। इसी के साथ तहसील मुख्यालय के आसपास के 30 ग्राम पंचायतों में समिति की इकाइयां गठित की जाएगी। बैठक में तय किया गया है कि भविष्य में प्रस्तावित नगर पंचायत सहित मुनस्यारी के समस्त ग्राम पंचायतों में समिति की इकाइयां बनाई जाएगी।

समिति मुनस्यारी के समस्त ग्राम पंचायतों का प्रतिनिधित्व करेगी। समिति के द्वारा विभिन्न मुद्दों पर जन जागरूकता के साथ-साथ जन संघर्ष भी किया जाएगा। इसके लिए भी प्रस्तावना तैयार की जाएगी।

मुनस्यारी विकास खंड में लगातार बढ़ रहे भूमि खरीद फरोख्त के मामलों पर चिंता व्यक्ति की गई। इस पर भी समिति अपना रूप स्पष्ट करेगी।

इस अवसर पर समाजसेवी श्रीमती तारा पांगती, कर्नल मंगल सिंह सयाना, लोक बहादुर सिंह जंगपांगी, मनोहर सिंह टोलिया, केदार सिंह मर्तोलिया, प्रमोद द्विवेदी, ईश्वर सिंह कोरंगा ने अपने विचार व्यक्त किए। समिति की अगली बैठक 5 जुलाई को ग्राम पंचायत मल्ला घोरपट्टा के पंचायत घर में रखी गई है। जिसमें आज तक की प्रारूप पर बातचीत की जाएगी।

लापता छात्राओं का नहीं मिला कोई सुराग, परिजनों ने किया एसएसपी कार्यालय का घेराव

संवाददाता

हल्द्वानी। हल्द्वानी के बनभूलपुरा से पिछले तीन दिन पहले लापता हुई 2 छात्राओं का अभी तक कोई सुराग नहीं मिला है। आक्रोशित परिजनों ने विभिन्न सामाजिक संगठनों के साथ रविवार को एसएसपी कार्यालय का घेराव कर विरोध प्रदर्शन किया। लोगों ने आरोप लगाया कि समुदाय विशेष का एक युवक हिंदू समाज की दो बच्चियों को लेकर गुरुवार शाम से गायब है और पुलिस केवल गुमराह कर रही है। प्रदर्शनकारियों ने तत्काल बच्चियों को ढूंढ़ने की मांग को लेकर जमकर विरोध प्रदर्शन किया और एसएसपी कार्यालय में धरना दिया। वहीं मामले को लेकर एडिशनल एसपी प्रकाश आर्य का कहना है की पुलिस की टीम बच्चियों की बरामदगी के लिए लगी है। जल्द ही दोनों किशोरियों को सकुशल ढूंढ लिया जाएगा।

चोरी की योजना बनाते चार टप्पेबाज दबोचे, 4 ब्लेड कटर बरामद

हमारे संवाददाता

हरिद्वार। चोरी की योजना बनाते चार टप्पेबाजों को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है। जिनके पास से चार ब्लेड कटर भी बरामद किया गया है।

जानकारी के अनुसार बीती रात नगर कोतवाली पुलिस को सूचना मिली कि रेलवे सुरंग की आड़ में सूर्योदय होटल के सामने कुछ टप्पेबाज चोरी की योजना बना रहे है। सूचना पर कार्यवाही करते हुए पुलिस ने बताये गये स्थान पर दबिश देकर चार लोगों को हिरासत में ले लिया। जिनके पास से चार ब्लेड कटर भी बरामद किये गये है। पूछताछ में उन्होने अपना नाम मोनू पुत्र शमशेर निवासी ग्राम दवलाना थाना नरवाना जिला जिन्द हरियाणा, नितिन पुत्र राजेन्द्र सिंह यादव निवासी मौहल्ला रोशनगंज वडा विसराज थाना सदर बाजार जिला शहाँजहाँपुर उ.प्र., अजय पुत्र श्याम प्रसाद उर्फ छोटू प्रसाद निवासी पूर्वी नाथनगर गली न.-3 थाना ज्वालापुर हरिद्वार व साहिल राणा पुत्र दरवान सिंह राणा निवासी गुंसाई गली भीमगौडा हरिद्वार बताया। पुलिस ने उन्हे न्यायालय में पेश कर जेल भेज दिया गया है।

आर.एन.आई.- 59626/94

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक श्रीमती पुष्पा कांति कुमार द्वारा दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग घंटाघर, देहरादून से प्रकाशित तथा अवि प्रिंटर्स 21 ईसी रोड, देहरादून से मुद्रित।

प्रधान संपादक
कांति कुमार

संपादक
पुष्पा कांति कुमार

समाचार संपादक
आनंद कांति कुमार

कानूनी सलाहकारः
वी के अरोड़ा, *एडवोकेट*
बैजनाथ, *एडवोकेट*

कार्यालयः दिग्विजय सिनेमा बिल्डिंग देहरादून।
मो. 9358134808

नोटः सभी विवादों के लिये देहरादून न्यायालय ही मान्य होगा, प्रकाशित सामग्री के लिए प्रिंटर्स की कोई जिम्मेदारी नहीं होगी।